तीसरा अध्याय

हिमांशु जोशी की कहानियों का अनुशीलन

हिमांशु जोशीजी पहाड़ी लोगों की पीड़ा और महानगरीय मध्यवर्ग की पीड़ा को समान अधिकार से यथार्थ परिवेश में उजागर करनेवाले 'एक संवेदनशील कहानीकार हैं । सन् 1954 ई. से आज तक उन्होंने करीब सौ तक कहानियाँ लिखी हैं, जो " इक्यावन कहानियाँ," " अंतत:" " रथचक्र ", " मनुष्य - चिन्ह ", " जलते हुए डैने " आदि कहानी - संग्रहों में संकलित हैं । इन्हीं कहानियों का अनुशीलन हम करने जा रहे हैं ।

किसी भी कहानीकार की कहानियों का मूल्यांकन करते समय अध्ययन की दृष्टि से वर्गीकरण करना सुविधाजनक होता है । आज तक जोशीजी की कहानियों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया गया है ; जो निम्नप्रकार से है :-

अ) प्रथम में " हिमांशु जोशी की विशिष्ट कहानियाँ", शीर्षक संकलन में विषय के आधार पर वर्गीकरण किया गया है । जैसे -

1) व्यवस्थागत विसंगतियों की कहानियाँ ।

2) मानवीय संबंधों की कहानियाँ ।

3) आर्थिक सामाजिक संदर्भो की कहानियाँ ।[1]

ब) व्दितीय में संदर्भित पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर वर्गीकरण किया गया है । जैसे -

1) श्रमिक या निम्न वर्ग ।

2) मध्य वर्ग ।

3) उच्च या शेषक वर्ग ।"[2]

क) तृतीय में डॉ. विवेकी राय की पुस्तक के संदर्भ अनुसार " जोशीजी की कहानियों का वर्गीकरण वस्तु रूप में किया गया है ।

1) प्रथम :- पर्वतांचल का ग्रामजीवन

2) व्दितीय :- समसामायिक पारिवारिक जीवन

3) तृतीय :- महानगरीय मध्यवर्ग का आधुनिक बोध ।"[3]

इन तीनों का वर्गीकरण विषय और वर्ग के आधार पर हुआ है । इन तीनों वर्गीकरणों के अतिरिक्त प्रवृत्ति के आधार पर, काल के आधार पर, शैली और विचार के आधार पर एवं समस्या के आधार पर भी वर्गीकरण किये जा सकते हैं । जोशीजी की कहानियों में मुख्यतः समकालीन जीवन की अंतहीन समस्याओं का उद्घाटन हुआ है । जैसे -

1) सामाजिक समस्या ।
2) आर्थिक समस्या ।
3) राजनीतिक समस्या आदि ।

इन्हीं समस्याओं को आधार मानकर हम जोशीजी की कहानियों का मूल्यांकन करने जा रहे हैं । जोशीजी ने समाज और व्यक्ति की कई समस्याएँ अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों के सामने रखने की कोशिश की है, जिनमें समय का यथार्थ - दर्शन होता है ।

मूल्यांकन का उद्देश्य:-

समस्या और उसकी जड़ें खोजकर पाठकों के सामने रखना मूल्यांकन का एक उद्देश्य होता है । समस्याओं के आधार पर मूल्यांकन करते समय समस्याओंकी जड़ें खोजनी चाहिएँ । जब तक समस्याओं की जड़ें नहीं मिलतीं तब तक समस्या का सुलझना दूभर होता है ।

युग और परिस्थिति के अनुसार समस्याओं को अलग अलग दृष्टिकोण से देखना चाहिए । नहीं तो समस्या ही समाज, व्यक्ति और देश को नष्ट कर देगी ।

उपर्युक्त तीनों वर्गीकरणों में आम - आदमी का संघर्ष, यंत्रणाएँ, आत्मप्रवंचना स्वार्थ के लिए देश को दाँवपर लगानेवाले राजनीतिज्ञ, ग्राम जीवन की दरिद्रता, अज्ञान, शोषण, परंपरागत संघर्ष चित्रित है । इन वर्गीकरणों को देखने के पश्चात् मेरे मन में निम्न प्रकार के प्रश्न उपस्थित हुए ।

1) इन संघर्षों के पीछे कौन - से कारण हैं, जिनके कारण आम - आदमी दुःखी, पीड़ित, शोषित और संत्रस्त है ?

2) व्यक्ति और समाज की कौन - सी समकालीन समस्याएँ जोशीजी की कहानियों में हैं ?

3) इन समस्याओं की जड़ें कहाँ तक पहुँच गयी हैं ?

4) उनका वास्तविक यथार्थ चित्रण जोशीजी की कहानियों में हुआ है या नहीं ?

इन प्रश्नों की खोज हम हिमांशु जोशीजी की कहानियों के आधार पर करने जा रहे है ।

समस्याओं से संबंधित इन मुद्दों की चर्चा के लिए हिमांशु जोशीजी की कहानियों को हम मुख्यतः तीन विषयों में बाँट रहे हैं । जैसे -

1) सामाजिक समस्याओं से संबंधित कहानियाँ ।

2) राजनीतिक समस्याओं से संबंधित कहानियाँ ।

3) आर्थिक समस्याओं से संबंधित कहानियाँ ।

आगे चलकर इनमें से प्रत्येक प्रकार का विश्लेषण जोशीजी की कहानियों के आधार पर किया जा रहा है । इस विश्लेषण में आवश्यकता पर और अधिक वर्गीकरण भी किया जा रहा है ।

पहले हम सामाजिक समस्याओं से संबंधित कहानियों पर विचार करेंगे ।

1) सामाजिक समस्याओं से संबंधित कहानियाँ :-

इन समस्याओं से संबंधित कहानियों का मूल्यांकन करने से पहले हम सामाजिक समस्या का अर्थ स्पष्ट करना चाहते हैं । सभी समस्याएँ समाज में रहनेवाले लोगों की ही समस्याएँ हैं, कारण समस्याओं का निर्माता वह स्वयं है ।

समाज के अंतर्गत अर्थ, पद, अधिकार रूढ़ी आदि के कारण लोगों में विषम संबंध पैदा होते हैं । इनमें से एक या अधिक या सभी कारणों से कोई उंचा तो कोई नीचा बन जाता है । इस विषमता को बनाए रखने के लिए फिर नियम या व्यवस्था का निर्माण होता है । इससे जो समस्याएँ पैदा होती हैं वे मुख्यतः सामाजिक समस्याएँ हैं जैसे भारत में दलित - विषयक, नारी विषयक, शेषित समाज विषयक समस्याएँ हैं ।

हिमांशु जोशीजी ने अपने परिवेश को लेकर अनेक सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन अपनी कहानियों के माध्यम से किया है, जिनके अंतर्गत -

1) पारिवारिक समस्या,
2) नारी - विषयक समस्या,
3) प्रेमविषयक समस्या,
4) नौकरी - पेशा औरतों की समस्या,
5) बेरोजगारी की समस्या,
6) महानगरीयमध्य वर्ग की समस्या आदि आती हैं ।

अ) **पारिवारिक समस्या** :- मनुष्य साथ - साथ रह सके इस लिए परिवार और समाज की निर्मिति हुई । लेकिन इस निर्माण के साथ संघर्ष भी आरंभ हुआ । युगानुरूप इस संघर्ष की पार्श्वभूमि में बदलाव आया, जिसका चित्र हम आधुनिक युग में देख सकते हैं ।

हिमांशु जोशीजी की कहानियों में संघर्ष के कई अंश हैं । जोशीजी की कहानियों में संयुक्त परिवार, महानगरीय परिवार और छोटे परिवार का संघर्ष चित्रित है । इस प्रकार की पारिवारिक संघर्ष से संबंधित कहानियाँ हम आगे प्रस्तुत करने जा रहे हैं ।

1) **संयुक्त परिवार विषयक** :-

1) **आँखें** :- "आँखें" कहानी में संयुक्त परिवार के विघटन की मुख्य समस्या चित्रित है । इस कहानी के माध्यम से जोशीजी ने रूढ पारंपरिक पारिवारिक मूल्य का समर्थन किया है । इस कहानी में पारिवारिक संबंध के टूटने की वेदना है, जिसके दो कारण बताये गये हैं - एक पढ़ने - लिखने और नोकरी के कारण लड़के शहरों में चले गए, दूसरा कारण आर्थिक स्वावलंबन है । इन दोनों कारणों की वजह से "आँखें " कहानी में पारिवारिक भावना के आत्मीय संबंध ही टूट गये हैं । इसीकारण ही बाबा के लड़के अपने भाई के बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी उठाने से इन्कार करते हैं । बाबा की

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

आखरी उम्मीद अपने छोटे बेटे पर थी पर उसने भी निराशा कर दी । काकी ने भी रिंचा को अपने पास रखने से इन्कार किया । इसपर बाबा को संदेह होता है - क्या परभात के साथ मेरे सारे लड़के ही मर गये हैं! ऐसा होने के कारण ही खून के रिश्ते भी टूट जाते हैं । जोशीजीने " बाबा " के उद्‌गारों व्दारा इस जीवन्त पारिवारिक - विघटन की समस्या पर प्रकाश डाला है ।

इस संयुक्त परिवार का बोझ उठानेवाले बाबा रिटायर्ड होते ही कहानी नया मोड़ लेती है । बाबा के मन पर एक के बाद एक करके आघात होने लगते हैं, जिनसे उनका सन्तुलन ही बिगड जाता है । वे अपना सारा जीवन ही संघर्षो से जूझते हुए बिताते हैं । जैसे वे पहले रिटायर्ड होते है, इसके बाद बड़े बेटे परभात की मृत्यु होती है, दो बेटे शहरों में अपना घर बसाते हैं, वे इनके बड़े बेटे के परिवार का बोझ अस्वीकार करते है, उनकी जिम्मेदारी बाबा पर पड़ती है, बाबा फिर नौकरी करने लगते हैं, रिचा अपनी बहन की नौकरी का प्रस्ताव रखती है. बाबा इसका विरोध करते हैं, बाद में बाबा को कम दिखाई देने के कारण नौकरी से छुट्टी होती है, ततपश्चात् उनकी आँखों की जाँच होकर फिर रोशनी मिलती है । इन सब संघर्षों की तपस्या के बाद कुछ उम्मीदें लेकर बाबा घर आते हैं । लेकिन बड़े बेटे का उध्वस्त परिवार देखकर उनको सदमा पहुँचता हैं । यह दुःख वे बरदास्त नहीं करते ।

इसी मानसिक अघात से उनकी मृत्यु हो जाती है । इसतरह परिवार के टूटे मूल्यों को देखकर बाबा खुद ही टूट जाते हैं । बाबा अपने संयुक्त परिवार के टुकडों को जोड़ने में कामयाब नहीं होते । इसी का खेद जोशीजी को है । इसलिए वे " दूध का गिलास पानी हो गया ।"[4] इस वाक्य से अपनी संवेदना प्रकट करते हैं । इसीकारण हम इस निष्कर्ष पर पहँचते हैं कि जोशीजी ने " आँखें " कहानी के माध्यम से परंपरागत मूल्यों का आग्रह किया है।

2) दाम्पत्य विषयक पारिवारिक समस्या :-

हिमांशु जोशीजी की कई कहानियों में पारिवारिक जीवन में दाम्पत्य संघर्ष चित्रित है । इसमें " परिणति ", " अनचाहे, " नावपर बैठे हुए ", " सिमटा हुआ दुःख " आदि कहानियाँ आ जाती हैं ।

1) **परिणति :-**

" परिणति " कहानी में स्त्री के त्याग पर टिका दाम्पत्य जीवन प्रस्तुत है । जोशीजी ने इस कहानी के माध्यम से स्त्री का आदर्शशील व्यक्तित्व उद्घाटित किया है । नारी एक त्याग की मूर्ति है वह पति को ही परमेश्वर मानकर चलती है, आज की पढ़ी - लिखी सभ्य भारतीय नारी के प्रतीक के रूप में वितस्ता का चरित्र उद्घाटित हुआ है ।

वितस्ता अर्थशास्त्र में एम. ए. कर गृहस्थ जीवन अपनानेवाली एक सुसंस्कृत भारतीय नारी है, जो पति का सुख - दुख ही अपना मानकर पति के सुख के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार होती है । वितस्ता साक्षात त्याग की मूर्ति है । उसका पति चिरंतन पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित एक भारतीय पुरुष है, जो अपनी पत्नी के सामने ही अपनी गर्ल फ्रेंड जुबेदा को गले लगाता है । वितस्ता सब देखकर भी उसे कुछ नहीं बोलती । लेकिन अपने पति को बदलने की कोशिश जरूर करती है । वह खुद बदलकर जुबेदा की तरह पति के लिए मोहक बनने की चेष्टा करती है । फिर भी चिरंतन जुबेदा को छोड़ नहीं सकता । उसके बाद वितस्ता का मन विद्रोही हो उठता है, वह अपने पति को अपने पत्नीत्व का एहसास दिलाने के लिए अपने पास सहेली बिंदो के भाई का फोटो और झूठा प्रेम पत्र रखकर शराब पीकर बेहोश होने का नाटक करती है । परन्तु अपने आप पर ही लज्जित होकर वह रात भर न सोए हुये पति से कह देती है कि यह कल रात जो भी मैं ने किया वह सब झूठ था ।

वितस्ता के मन में पति के प्रति श्रध्दा दिखाई दी है, इसलिए वह कहती है आप जो भी कुछ कीजिए मैं खुश रहूँगी ।" जिस ढंग से आपको सुख मिले, वैसा कीजिए । आपकी खुशी से मेरी खुशी क्या अलग है । आपकी खुशियों के लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ --- सब कुछ --- ।"[5] इन वाक्यों से वितस्ता की त्याग की भावना दिखाई देती है ।

इस कहानी के अंत में वितस्ता अपने पति से कहती है " -"अपने पाँवों के पास थोडी - सी ठौर दे दीजिए । वहीं पर पड़ी रहकर जिंदगी गुजार दूँगी । कभी उफ तक नहीं करूंगी ।"[6] जोशीजीने वितस्ता के रूप में भारतीय नारी का चित्रही उभारा है । भारतीय नारी का स्थान पति के पाँव के पास ही होता हैं ।

इस कहानी में इसतरह भारतीय नारी - परंपरा का समर्थन किया गया है । जोशीजी ने पढ़ी - लिखी नारी को परपरागत भारतीय पत्नी के रूप में देखा है । इसलिए उसे त्याग की मूर्ति के रूप में चित्रित किया है ।

2) **अनचाहे :-**

" अनचाहे " कहानी में पति - पत्नी के टूटे संबंध को बनाए रखने का आग्रह है । विशेषतः स्त्री पुरुष के आपसी प्रेम संबंध पर शारीरिक आकर्षण का आरोप लगाकर अनैतिक सबंध से जोड़ने का प्रयास किया जाता है । इसी कारण से दाम्पत्य जीवन में संघर्ष की चिनगारी लग जाती है । इसी संघर्ष को जोशीजी " अनचाहे " कहानी के माध्यम से चित्रित करते हुए पति - पत्नी के अटूट संबंध ताईद करते हैं ।

" अनचाहे " शीर्षक कहानी में एक भोली - भाली, बातूनी, पतिपर विश्वास रखकर उसे भाई साब की सारी बातें कहनेवाली और भाईसाब से अपने पति के बारे में कहनेवाली एक बहनजी है । यह बहनजी पड़ोस के कहानी लिखनेवाले भाई साहब के आचरण की सभ्यता से प्रभावित होती है, जिससे उसका पूरा स्वभाव ही बदलता है । वह खुद खादी के कपड़े पहनकर, पति और बच्चे को भी खादी के कपड़े पहनाने के लिए मजबूर करती है, वह लिपस्टिक लगाना छोड़ देती है, उसके सामने पड़ोसिन से गला फाड़ - फाड़कर बोलना छोड देती है और उसके साथ बात - चीत करके और पुस्तके लेकर अपनी पढ़ने - लिखने की इच्छा पूरी करना चाहती है । और चाहती है कि पति भी ऐसा ही व्यवहार करे । इसी कारण ही पति पत्नी के संबंध में संदेश पैदा होता हैं और उसका अनपढ़ पति उसकी हड्डी - पसली एक कर अपने स्वभाव का दर्शन कराता है । परन्तु अंत में उसके पति को समझाने के बजाय ही " मैं " मकान छोडकर चला जाता है ।

अंत में जोशीजी की प्रवृत्ति दाम्पत्य जीवन को सुखी करने की ही रही है । इसलिए जोशीजी इस संघर्ष का समाधान " उस " के मकान छोड़ चले जाने से करते हैं । इसतरह जोशीजी ने टूटते हुए दाम्पत्य संबंध को बनाए रखने की कोशिश की हैं ।

3) **स्वभाव** :-

" स्वभाव " कहानी मालती के पत्नीत्व की रक्षा की कहानी है । इस कहानी में मालती का मानसिक स्थिति से जूझने का चित्र उभरा हैं । मालती अपने अस्तित्व को बने रखने के लिए तडपती है । लेखक उसके मन के व्दारा ही इस ओर संकेत करते हैं ।

मालती जितेन की पत्नी है । वह पिछले सवा साल से बीमार है । उसका शरीर बेकाम हो गया है । जितेन भी उसका इलाज करवाते - करवाते ऊब गया है । मालती के दो बच्चे हैं, जो अपनी बुवा के पास रहते हैं । उन बच्चों से कहा गया है कि उनकी माँ बीमार है, मरनेवाली है । बच्चों की चिंता भी मालती को सताती है । पहले जितेन उसके साथ मीठी बातें करता था । कभी उखडा - उखडा - सा रहता था । लेकिन ऑफिस के कामों में तन - मन से जुटा रहता था । अपने बच्चों की स्तुति उसके सामने करता रहता था।

जैसे गिलहरी को ले आता है, वैसे ही जितेन का बर्ताव ही बदल जाता है । तब से मालती चैन से सो भी नहीं सकती । ऊपर से भोली भाली लगनेवाली गिलहरी कभी - कभी सयानी - सी बातें करती तो मालती के समझ में नहीं आता कि वह भोली है या चालाक । वसे तो जितने से भैया कहकर पत्नी - सा व्यवहार करती है । 'अधिक न पढ़ी - लिखी मालती उसे ठीक तरह से समझ नहीं सकती । उसके मन में दोनों के संबंध के बारे में संदेह पैदा होता है । इसी कारण ही जब वे दोनों दिल्ली घूमने जाते हैं तो अपनी कल्पना से उनके प्रणय का चित्र वह देखती है । बार - बार उसे कल्पना के सपने आने लगते और उसकी नींद ही उड़ जाती है । उसका मन - ही - मन में आक्रोश चलता है । परन्तु वह उसे प्रकट नहीं करती ।

बच्चों की चिंता से एक बार मालती गिलहरी से पूछती है - " मेरे बच्चों की देख - रेख कर सकोगी, मिन्नी । उन्हें प्यार दे सकोगी । बिलकुल तुम्हारे भैया पर गए है- -"[7] "पूछने के पश्चात् वह खुदही पछताने लगती है । इसतरह उसके मन में अंत तक द्वंद्व चलता ही रहता है ।

कहानी के अंत में लेखक पति - पत्नि के बीच आई गिलहरी याने मिन्नी को गाँव भेज देते हैं, क्योंकि कुछ दिन के लिए क्यों न हो मालती को जीना संभव हो ।

मालती के माध्यम से जोशीजी परंपरागत भारतीय नारी - स्वभाव का दर्शन कराते हें कहानी के अंत में मालती की अवस्था मिनी के जितेन का फोटो ले जाने से संदिग्ध होती हे । परन्तु लेखक इसतरह के अविश्वास को विश्वास में बदल देते हैं, जैसे मालती सोचती हे जितेन अच्छा है, वह हरगिज ऐसा नहीं है । इसतरह संदेह को विश्वास में बदलकर जोशीजी बीच में आये काँटे को हटाकर दाम्पत्य जीवन को सुखी करते हैं । इसप्रकार मालती अपने पत्नीत्व के अस्तित्व के प्रति जूझती है ।

पत्नीत्व के अस्तित्व का बोध करानेवाली " स्वभाव " कहानी के माध्यम से जोशीजी पति - पत्नी का संबंध बनाए रखने का आग्रह करते हैं ।

4) किनारे के लोग :-

" किनारे के लोग ' कहानी में दाम्पत्य के टूटते संबंध की चिंता अभिव्यक्त करते हुए जोशीजीने स्त्री - पुरुष संबंध का समर्थन किया है । समाज ने स्त्री - पुरुष संबंध को कृत्रिम - मृत और अर्थ हीन विवाह - संस्था से बाँध दिया है । लेखक विवाह संस्था के प्रति अविश्वास प्रकट करते हैं । विवाह - संस्था का पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए इस ओर संकेत करते हुए जोशीजी दो दाम्पत्यों के टूटते संबंधों को चित्रित करते हैं ।

जोशीजी इस नाजूक संबंधों के प्रश्न को बड़ी सावधानी से उठाते हैं, जिसमें नये मूल्य को अपनाने का आग्रह है । विवाह जैसे बंधनों में बंधकर भी संबंधहीनता की भावना आ जाती है । " किनारे के लोग " कहानी के माध्यम से लेखक दाम्पत्य के टूटते संबंध को चित्रित कर परपरागत आस्था को ठेंस पहुँचाते हुए विवाह बंधन कितना खोखला हो गया है, यह स्पष्ट करते हैं, क्योंकि विवाह के रिश्ते से जुड़े हुए पति - पत्नी भी अब अधिक दिनों तक एक साथ नहीं रह सकते, तो विवाह से बाँधे रहने का क्या मतलब हो सकता है ? इस प्रश्न को उठाते हुए जोशीजी ने तपन ओर महिला की अंत -पीड़ा को प्रस्तुत किया है । इन दोनों के संबंध टूटने का कारण एक ही है बीमारी ।

12290
A

तपन लंबी बीमारी से थका, हताश और हरतरह से टूटा हुआ, खुद को युवा अनुभव न करनेवाला अट्ठाईस बरस का युवक है, जिसकी पत्नी बीमारी के कारण उसे किस्मत के सहारे छोडकर चली गयी है । बेबी की माँ पति से छोडी हुई स्त्री और टी. बी. के बीमार बच्चे की दुर्भाग्य-शाली माँ है । इन सम दु:खीयों की भेंट नैनीताल के अस्पताल में हो जाती है । यही भेंट सूक्ष्म आकर्षण में बदल जाती है । परन्तु ये संबंध बन नहीं पाते, क्योंकि हर एक का दु:ख उसे ही भुगतना पड़ता है । लेखक इस संबंध को न बनने की ओर संकेत करते हुए कहते हैं " तपन दोनों डांड़ बराबर चलाता, हांफता रहा । बड़ी देर बाद उसे ख्याल आया, कि एक घंटा तो कब का बीत गया, और अब चारों ओर अंधेरा है ।"[8]

इसप्रकार स्त्री - पुरुष के संबंध नहीं बन सकते । परन्तु समाज की ओर से स्त्री - पुरुष संबंध का स्वीकार हो जाय, इस पर लेखक ने जोर दिया है ।

3) पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था संबंधि समस्या :-

1) एक समुद्र भी :-

' एक समुद्र भी ' कहानी के माध्यम से जोशीजी ने सामाजिक और पारिवारिक, व्यवस्था के बीच द्वंद्व को नये ढंग से प्रस्तुत किया है । इस कहानी में लेखक भीतरी और बाहरी स्थितियों का समान्तर लेकर चलते हैं । इस कहानी में मानवीय संबंध असुरक्षित हैं । इसलिए तापस को अपनी जिंदगी पराई लगती है । उसके जीवन पर पारिवारिक संबंधों का और आस - पास के माहौल का गहरा असर पड़ा है । इसी कारण वह अपने घर पिछले आठ सालों से गया नहीं । इसलिए वह अकेलापन महसूस करता हैं ।

तापस के बचपन में ही पिता की मृत्यु हो गयी थी । उसकी खुबसुरत माँ, पिता के गुजरे कई दिनों में ही दूसरी शादी कर, वर्ष के अंदर ही एक बच्चे को जन्म दे चुकी थी । एक दिन वह अपने पुराने पति के साथ - साथ पुरानें बच्चों को भूलकर दूसरे के घर (पति के घर) गयी थीं । उसके बाद तापस ओर उसकी छोटी बहन मिलकर रहते थे । छोटी बहन का बाद में क्या हुआ इसका उल्लेख नहीं मिलता । तापस ने विवाह भी नहीं किया, क्योंकि अपने पिता की तरह दूसरों के लिए पत्नी को नहीं छोड़ जानां चाहता । इसी कारण अपने माँ के व्यवहारों प्रति उसके मन में घृणा की भावना है ।

परिवार की तरह समाज का बुरा असर भी उसपर पड़ा है । उसके आस - पास का समाज भी स्वार्थी है । तापस जर्मनी चला जानेवाला है, यह समझते ही एक मित्र पलंग ले जाता है, तो दूसरा पंखा तो तीसरा पुरानी घड़ी ले जाता है । इसतरह एक एक करके सामान ले जाते हैं । उसे लगता है " कोई मित्र किसी दिन आकर कहेगा - तापस, तुम अपनी आँखें हमे दे जाना - मरने से पहले, हड्डियों को भी व्यर्थ में जलकर लकडियाँ बेकार करने से क्या । तुम मरो तो इस कमरे में कोई और गरज़मंद रह लेगा । एक आदमी को " जीने " में सहूलियत हो जायेगी - ।"[9] इसतरह वह अपने मित्रों से तो हेरान हो जाता है । वैसे तापस के पड़ोस में चंद्रा जैसे नामर्द भी रहते हैं, जो अपनी पत्नी से वेश्या व्यवसाय करवाते हैं । इन सभी का असर तापस पर पड़ता है, जिससे वह हार जाता है, टूट जाता है । इसलिए तापस को लगता है - " एक दिन पिता की तरह मैं भी बाथरूम में बुत बना मिलेगा ।"[10] इसतरह तापस सामाजिक और पारिवारिक उलझनों में फँसा है । लेखक ने इस कहानी में तापस की अंतर्पीडा और अकेलेपन को चित्रित किया है । इस कहानी के माध्यम से लेखक मानवीय संबंधों को बनाए रखने का अनुरोध करते हैं ।

2) **रथचक्र :-**

" रथचक्र " एक पारिवारिक कहानी होते हुए भी एक व्यापक सामाजिक अर्थ रखती है । यह सारी दुनिया की ही कहानी है । लेखक इस कहानी के माध्यम से कहते हैं कि मनुष्य थम जायेगा पर जीवन का मार्ग सदा चलता रहेगा । इस कहानी का शीर्षक " रथचक्र " यही दर्शाता है कि " सड़क का सुहाग अचल है । " लोग आते हैं, चले जाते हैं, पर जीवन - मार्ग वैसा ही बना रहता है । इसलिए जोशीजी इस कहानी के अंत में कर्म करते रहने का संदेश देते हैं - जैसे " दूर कुछ गड्ढे और चमक रहे हैं, जिन्हें अम्मा ने जाड़ो में खुदवाया था, जिनपर पौधे अब मुझे लगाने हैं ।"[11]

" रथचक्र " एक परिवार की कहानी है, जिसकी शुरुवात जितेन के पिता की मृत्यु से होती है । पिता के मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी बूढ़े बाबा उठाते हैं, जो अपने लड़के के दोनों बच्चों को पढ़ा - लिखाकर स्वावलंबी बनाते हैं । बाबा मरने के बाद परिवार का बोझ जितेन के बड़े भैया पर पड़ता है । बड़े भैया मिलिटरी में हैं, जिनकी शादी केरलीयन

लड़की के साथ होती है । उनके बच्चें भी हैं । माँ ने जितेन की शादी एक सुंदर गाँव की लड़की से तय भी की हैं । परंतु जितेन के बड़े भैया पाकिस्तान के युध्द में मरे जाने के कारण - उनके बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी जितेन पर पड़ती है, जिसके कारण वह अपनी शादी कई दिनों तक नहीं कर सकता । अब उसे परीवार की जिम्मेदारी संभलकर अपना कर्तव्य निभाना है । इसतरह परंपरागत पारिवारिक तत्वों को लेकर " रथचक्र " कहानी बुनी गई है, जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती हैं ।

इसतरह " रथचक्र " कहानी व्यापक अर्थ रखती है । एक व्यक्ति के मरने के बाद दूसरे के हाथ में जिम्मेदारी की बागडोर आती है । इसतरह निरन्तर गति से यह सृष्टि का नियम चलता रहता हैं । " रथचक्र " एक घर की कहानी न होकर प्रत्येक घर की कहानी है । इसी सनातनी पारिवारिक मूल्य का लेखक समर्थन करते हैं ।

निष्कर्ष :-

1) त्याग पर टिका दांपत्य - जीवन ।
2) पति - पत्नी के टूटे संबंध को बनाए रखने का आग्रह ।
3) बीमार पत्नी का पत्नीत्व के अस्तित्व के लिए अंतर्संघर्ष ।
4) दाम्पत्य के टूटते संबंध की चिंता और स्त्री - पुरुष संबंध का समर्थन ।
5) सामाजिक - पारिवारिक व्यवस्था के बीच अंतर्पीड़ा और अकेलेपन की अभिव्यक्ति एवं मानवीय संबंध का समर्थन ।
6) सनातन पारिवारिक मूल्यों का अनुरोध ।
7) मृत्यू के बाद फिर जीने का संकेत है ।

आ) नारी विषयक समस्या :-

नारी अनेक यातनाओं से गुजरती है, नारी का जीवन अनेक समस्याओं से भरा है । एक ओर नारी देवी जैसी पूजी जाती है - तो दूसरी ओर उसपर पाशविक अत्याचार होता है । इसलिए पुरुष प्रधान समाज में नारी पर मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के अत्याचार हुए हैं,

जिससे नारी की अंतहीन समस्या सुलझाने के बदले उसपर अधिक अन्याय ही हुआ है । इसे हमारा समाज जिम्मेदार है । नारी चाहे गाँव की हो, महानगर की, नौकरी करनेवाली हो या घर का काम करनेवाली, विवाहित हो या अविवाहीत, पढ़ी - लिखी हो या अनपढ़, आधुनिक विचारों की हो या पुराने विचारों की, उच्चवर्ग की हो या निम्नवर्ग की, कोई भी स्त्री हो अत्याचारों से उसका छुटकारा नहीं है ।

हिमांशु जोशीजी मुख्यतः शोषित वर्ग की पीड़ा को चित्रित करनेवाले कहानीकार हैं । शोषित वर्ग में नारी अधिक दुर्बल होने के कारण उनकी कहानियों में नारी - समस्याओं का उद्घाटन हुआ है । विशेषतः इनकी कहानियों में अविवाहित, विवाहित, विधवा, परित्यक्ता और पहाड़ी अत्याचार से दबी नारी के मानसिक स्थिति का चित्रण हुआ है ।

क) अविवाहित नारी की समस्या :-

जोशीजी की दो कहानियाँ अविवाहित नारी का अंतर्द्वंद्व चित्रित करती हैं ।

1) जीना मरना :- प्रस्तुत कहानी मध्यवर्गीय युवती की अंतर्द्वंद्व की कहानी है, जिसके विवाह की जिम्मेदारी उसके भाई पर है, जो महानगरीय आर्थिक संकट में फँसा है । बरखा अपनी शादी की चिन्ता से मौन है । जब तक उसकी माँ जीवित थी तब तक उसकी शादी की आशा थी, क्योंकि उसकी माँ बरखा के ब्याह के लिए " बूंद - बूंद " पैसे इकट्ठा करती थी । उसकी भाभी अपनी ओर से अर्थ को जुटाने की कोशिश करती है । फिर भी उसका भाई आर्थिक दृष्टि से उसका ब्याह रचाने में असमर्थ है । माँ के मरते ही उसकी बची - खुची आशा भी खत्म होती है । इसलिए बरखा जिंदा लाश बनती है । किसी के साथ न बोलकर मौन रहती है और अपने आपसे संघर्ष करती है । इसतरह " जीना - मरना " में बरखा का अंत - संघर्ष चित्रित है ।

2) नाव पर बैठे हुए :- इस कहानी में नौकरी करनेवाली वसुधा का अन्तर्द्वंद्व प्रस्तुत है । वह एक निम्नवर्ग की कमाऊ बड़ी लड़की है, जिसपर आर्थिक दृष्टि से सारा परिवार निर्भर है । दर्शन उसका प्रेमी है, वह उससे शादी करना चाहता है । उस समय वसुधा के सामने दो समस्याएँ खड़ी होती हैं, एक शादी की और दूसरी घर की जिम्मेदारी की ।

इसी अन्तर्संघर्ष में वह घर की जिम्मेदारी को महत्व देकर दर्शन से शादी करने से इन्कार करती है । दर्शन की शादी दूसरी लड़की के साथ हो जाती है । परन्तु अविवाहिता वसुधा अपने मन के द्वंद्व से पीड़ित रहती है । जोशीजी ने वसुधा के माध्यम से नौकरी करनेवाली युवती का अतर्द्वंद्व ही चित्रित किया है ।

ख) परित्यक्ता नारी की समस्या :-

जोशीजी की कहानियों में से तीन कहानियाँ विवाहित नारी की समस्या पर प्रकाश डालती हैं, जिनमें परित्यक्ता नारी की ओर ससुराल के अत्याचार के पीड़ित नारी की वेदना है ।

1) किनारे के लोग :- " किनारे के लोग " शीर्षक कहानी में परित्यक्ता नारी का दुःख चित्रित है । विवाह से प्रतिष्ठित हुए संबंध आज टूटे जा रहे हैं, इसकी चिंता व्यक्त करते जोशीजीने एक महिला की अंतर्पीड़ा प्रस्तुत की है ।

बच्चे की बीमारी और स्त्री की ढलती उमर के कारण विवाह जैसा पवित्र संबंध तोड़कर महिला का पति दूसरी युवती के साथ रहता है । यह एक नारी का दुःख नहीं है, अनेक स्त्रियाँ इस दुःख से पीड़ित हैं ।

इसतरह विवाह बंधन टूटे जा रहे हैं, मानवीय संबंध टूट रहे हैं और नैतिकता नष्ट होती जा रही है, इस ओर संकेत करते हुए जोशीजी ने परंपरागत विवाह - संस्था के नियमों का विरोध किया है ।

2) फासला :- कहानी के नायक की बड़ी बहन ससुराल के अत्याचार से तंग आकर अपने अंतर्द्वंद्व से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या करती है । उसे न नैहर का सहारा मिलता है न पति का । मैके वालों में छोटे - छोटे भाई - बहन हैं जो खुद की रक्षा करनें में ही असमर्थ है और ससुरालवाले तो कसाई थे । उसपर मानसिक और शारीरिक अत्याचार या अन्याय करते थे । जिसका नतीजा उसके खुदखुशी में होता हैं.। वह अत्याचार सहते अंतर्द्वंद्व का शिकार होकर अपना दुःख अपने जीवन के साथ ही समाप्त करती है ।

3) यह सब " अ " संभव है :- इस कहानी में एक पहाड़ी परित्यक्ता स्त्री का दुःख चित्रित है । हरविंदर नामक एक पहाड़ी स्त्री अपने पति की शिकायत सरकारी संस्था का अर्जी देकर करती है । उसके सामने जीने की समस्या है । इसी अन्तर्वेदना से वह पीड़ित है । इसका पति परीतम उसे शारीरिक और मानसिक पीड़ा देता था । इसलिए वह पिछले तीन साल से अपने बूढे बाप के घर की रोटियाँ तोड रही है । अब उसके माँ - बाप उसकी सहायता करनें में असमर्थ है । अदालत में जाकर न्याय माँगने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं। अतः उसके सामने " क्या करें ? केसे जीएँ ? कहाँ जाये ! " आदि प्रश्न उपस्थित हुए हैं । इसलिए वह अपना दुखड़ा रोती है । इसी अंतर्द्वंद्व में परित्यक्ता स्त्री अपना जीवन बिताती है । जोशीजी ने इस घटना के माध्यम से परित्यक्ता स्त्रियों के प्रश्न पर प्रकाश डाला है ।

ग) विजातीय विवाह समस्या :-

जोशीजी की कहानियों में केवल एक कहानी विजातीय विवाह समस्या पर आधारित ह । इसमें अंतरजातीय विवाह के बाद आनेवाले संकट का विवेचन है ।

1) कटी हुई किरणें :- प्रस्तुत कहानी में अंतरजातीय विवाह के पश्चात् होनेवाली मानसिक स्थिति का चित्रण है । इस कहानी का नायक रंडुआ हरपतिया लोहार और तीन बच्चोंबाली मुसलमान रजियानी एक दूसरे को सहारा देने के लिए विवाह बंधन में बँध या जकड़ जाते हैं । इसीकारण हरपतिया पर नाक कटवाने का आरोप लगाकर बिरादारी में उसका हुक्का - पानी पीना बंद करते हैं । समाजवाले उसे तेज धार के वचन बाणों से घायल कर देते हें । इतना ही नहीं रजियानी के बच्चों के साथ कोई बच्चा खेलने भी नहीं आता । इसलिए दानों ही अंतर्द्वंद्व से पीड़ित होते हैं ।

हरपतिया को उससे प्यार करनेवाली रजियानी और बच्चे पराये लगने लगते हैं । बिरादारी में उसका अस्तित्व नहीं टिक पाता । मधिया के बारात में उसे बुलाकर अपमानित किया जाता है । परंतु वह संघर्ष नहीं करता । अपने दर्द को अंदर - ही - अंदर सहता है। इसीकारण रजियानी को दोनों का ताप मिटाने के लिए दु:खी होकर कहना पडता है कि " तो सुनो, मुझे छोड़ दो ।यह सब जी का जंजाल है । अपने परान को दु:ख क्यों देते हो । सताते

हो। पानी में रहकर मगरमच्छ से दुश्मनी । तुम चंद्रायणी कर लो । थोकदार - पंचों को, पाँच गाँव के प्रधानों को मुखधुलाई देदो । फिर बिरादरी में मिल जाओंगे और सारी मुसीबत कट जाएगी । "[12]

हरपतिया एक भला - मानुस है । वह रजियानी का दुःख अच्छीतरह से जानता है, वह अपने निर्णय का दृढ़ता से निर्वाह करता है । वह पत्नी के प्रति-उत्तर में कहता है " फिर इस जात - पात की फांस बांधकर क्या करना है । ऐसी भाई - बिरादरी से क्या करना है । कहने, न कहने से क्या लेना है । इनका यह " धर्म - कर्म " सब उसके शव के साथ जाने दे । दो हाथ हमारे पास है । कुछ भी काम कर लेंगे - ।"[13] समाज का विरोध सहकर हरपतिया रजियानी का संबंध बना रखने में सफल हुआ है । जाति - धर्म के संकुचित घेरे में फँसे हरपतिया जैसे कितने जीव होंगे पर हरपतिया - सी लड़ाई लड़ने की जिद भी कितनों के पास होगी !

जोशीजी ने सुधारवादी दृष्टिकोण से विजातीय विवाह - संबंधों पर प्रकाश डाल , समाज के विवाह संबंधी दृष्टिकोण का खण्डन कर अंतरजातीय विवाह का पक्ष ग्रहण किया है ।

घ) विधवा समस्या :-

हिमांशु जोशीजी की कहानियों में तीन कहानियाँ विधवा समस्या पर आधारित हैं, जिसमें से एक महानगर दिल्ली में रहनेवाली शिक्षित विधवा की व्यथा है और दो में पहाडों पर रहनेवाली विधवाओं की व्यथा है ।

1) न जानना :- " न जानना " कहानी के माध्यम से जोशीजी ने एक भारतीय विधवा नारी के मानसिक, शारीरिक और अकेलेपन की व्यथा पर प्रकाश डाला है । इस कहानी की शीला दिल्ली जैसे शहर में रहनेवाली अविनाश की तीस बरस की विधवा है । वह इतिहास में एम. ए. होने के कारण दिल्ली में नौकरी करती है और वह आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी भी है । इसलिए वह न ससुराल जाती है न मैके । दोनों घरवाले उसकी केवल औपचारिकता से पुछताछ करते हैं । इसलिए वह अपना भविष्य खुद बनानें के लिए अपने संस्कार भूलकर किसी पुरुष से रिश्ता जोड़ती है । फिर भी वह खुश न होकर अकेलेपन का दुःख महसूस

करती है, जिसका असर उसके छोटे बच्चे " केकी " पर पड़ता है । वह सदा गुमसुम ही रहता है । इस विधवा को अपने बेटे से अधिक अपनी फिक्र हैं ।

इसी कारण ही निवेदक जब अपने गांव जाने लगता है तब शीला अपने बारे में कुछ नहीं सोचने का दुःख, वेदना प्रकट करती है " - " राजी, सुन, कुछ ऐसी नौकरी ढूंढ जिससे तुझे दिल्ली में ही रहना पड़े - मैं अकेली रहती - रहती ऊब गई हूँ । भला घर का - सा वातावरण कहां मिलता - । फिर अकेली रहना क्या अच्छा है । पता नहीं, बाबूजी मेरे अकेले रहने पर ऐतराज क्यों नहीं करते - । कुछ तो सोचना चाहिए - ।"[14] कुछ तो सोचना चाहिए इस वाक्य से जोशीजी विधवा - विवाह की ओर संकेत करते हैं । इस कहानी में स्त्री - पुरुष संबंध को अत्यंत सूक्ष्मता से उठाया है । " न जानना " शीला के अकेलेपन की और अन्तर्द्वंद्व की कहानी है । इसमें जोशीजीने यह स्पष्ट करके कि स्त्री पुरुष दोनों एक दूसरे के बिना रह नहीं सकते, विधवा - विवाह का आग्रह किया है ।

2) **मनुष्य - चिन्ह :-**

" मनुष्य - चिन्ह " जोशीजी की बहुचर्चित आँचलिक कहानी है, जिसमें समाज से पीड़ित, हताश, निराश और निरपराध गोविंदी का घुटन भरा दर्द हैं । इस कहानी में समाज की काम - वासना की पीड़ा को मनुष्य - चिन्ह के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें दिखाया गया है कि अबला नारी का शोषण उनकी दलित जातियों और अशिक्षा के कारण हुआ है ।

एक बाल - विधवा गोविंदी इस कहानी की नायिका है, जो अपने बूढे बाप के सहारे जी रही है । गोविंदी अकेली, अशिक्षित, बेसहारा, दलित, शोषित, अबला और कमजोर युवती है, जो अंत तक अत्याचार सहती है परन्तु अन्याय के खिलाफ आक्रोश या विद्रोह नहीं करती।

" मनुष्य - चिन्ह " में दिखाया गया है कि अत्याचार करनेवाले निर्दोष हैं और अत्याचार सहनेवाली एक मुजरीम है । निरपराध को सजा देने के लिए पंचायत बैठती है और सजा देने के बजाय अत्याचार कैसे हुआ ? किसने किया ? गोविंदी चुप क्यों है ? ऐसी ही खोखली चर्चा करके गोविंदी पर सरपंच से पंच तक एक के बाद एक अत्याचार करते हैं ।

SHIVAJI UNIVERSITY

अत्याचार के पश्चात् पंचायत के परमेश्वर मामला पुलिस को सौंप देते हैं और पटवारी से पेशकार तक गाँव में आकर गोविंदी की एकांत में पुछताछ करते हैं । इतना ही नहीं वे गाँव की पिठाई भी करते हैं । इतना होने के बाद भी निरपराध गोविंदी संघर्ष नहीं करती । मौन रहकर अंततक चुपचाप अत्याचार सहती है ।

न्याय दिलानेवाले गांव के पँच और सरकारी आदमी न्याय के नामपर घृणास्पद बर्ताव करके स्त्री का शारीरिक और मानसिक छल करते हैं और दुर्बल नारी अन्याय का विरोध न कर अपनी पीड़ा स्वयं भुगतती हैं ।

3) **तरपन** :-

" तरपन " कहानी में एक निर्धन, नि:सहाय विधवा नारी की अन्तर्वेदना चित्रित है । " तरपन " जोशीजी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमिपर लिखी एक सफल आँचलिक कहानी है ।

इस कहानी की गरीब नारी अपने पति के जीव को पितरों से मिलाने की कोशिश करती है । पिण्डदान कर पति की भटकती आत्मा को मुक्ति दिलाने की बड़ी कठिन समस्या उसके सामने है । गांव का प्रत्येक आदमी उसे शाम होने से पहले तर्पण करने की सलाह देता है, परन्तु सहायता करने के लिए कोई नहीं आता । उसके मन में पिण्डदान के गहन प्रश्नके उत्तर की खोज शुरू है । एक ओर ब्राम्हण भोजन की आशा कर पिण्डदान के लिए बैठे गरुड - पुराण के मुताबिक दान - पुण्य करने के लिए कह रहे हैं । दूसरी ओर उसके बच्चे तीन दिन से भूखे तड़प रहे हैं । उसके घर में बत्ती जलाने के लिए भी तेल नहीं । ऐसी परिस्थिति में तर्पण का सामान जुटाने के लिए वह दुकानदार के पास जाती है, वहाँ उसकी इज्जत पर हाथ ड़ालने की कोशिश होती है, वैसे ही भागकर घर आती है तो ब्राम्हण उसे कुलच्छनी कहते हैं । परन्तु वैसी ही स्थिति में बिना ब्राम्हण के वह अंधकार में नदी के किनारे जाकर मिट्टी की गऊ बनाकर पिण्डदान और गोदान करती हैं ।

इस कहानी में पुरुषविहीन नारी की असहायता का फायदा लुटने की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है ।

ङ) पहाड़ी विवाहित नारी की समस्या :-

1) काला धुआँ :-

" काला धुआँ " एक निःसहाय पहाड़ी नारी की मानसिक और शारीरिक अत्याचार की, आँचलिक परिवेश में लिखी कहानी है, जिसमें समाज के अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए एक कमजोर विवाहित अबला आत्म संघर्ष करती है ।

" काला धुआँ " की नायिका खेत में काम करनेवाली एक निर्धन एवं सुंदर औरत है, जिस पर अत्याचार करने के लिए उसके पीछे सारा गाँव पड़ा है । उसका पति भूखमरी से संवेदन शून्य बन गया है । कभी - कभी पत्नी की आवश्यकता महसूस होते ही वह घर आता है । परन्तु उसे पत्नी की रक्षा की चिंता नहीं है । गाँव के लोग दो रोटी के टुकडे फेंककर उसका शारीरिक छल करते हैं । फिर भी वह अपना जीवन बिताती है । उसके दो बच्चे अकाल के कारण मर जाते हैं और एक बच्चे को उसका पति नारियल की तरह पटक - पटककर मार डालता है, जिस अपराध के लिए दोनों को दंड देने के लिए पंचायत बैठती है ।

पंचायत फैसला करती है कि मामला पुलिस तक पहुँचने से पहले उसके पति को मिट्टी का तेल उंडेलकर आग लगवा दी जाए और वह गाँव में रहे, क्योंकि गाँव के सभी लोग उसे चाहते हैं । यह फैसला सुनते ही नारी मौन असहमती देकर सोचने लगती है, पति के जीतेजी लोगों ने उसपर इतना अन्याय किया है, तो मरने के बाद उसका हाल क्या हो जायेगा । तब लोग उसे मरने भी नहीं देंगे । इसी मानसिक संघर्ष में वह सुबह होने से पहले गाँव छोड़कर जंगल में चली जाती है ।

इस कहानी में नारी शुरू से अंत तक मन में संघर्ष करती है । जोशीजी ने काला धुआँ के माध्यम से पहाड़ी नारी की अन्तर्वेदना प्रकट कर अन्याय के विरोध में मानवीयता और नारी की रक्षा का प्रश्न उठाया है ।

2) हत्यारे :-

" हत्यारे " समाज के अत्याचार से पीड़ित नारी की घुटन भरी दर्दनाक कहानी है, जिसमें अबला नारी हताश, निराश होकर आत्महत्या करती है ।

" हत्यारे " की नारी एक भोले - भाले गरीब मछुआकी पत्नी थी । वह स्वभाव से भोली - भाली, जवान और सुंदर भी थी । इसी कारण मुहल्ले के आवारा लड़के उसपर बुरी नजर डालकर उसके घर की परिक्रमा लगाते थे । उसके बूढे ससुर उन लड़कों को गालियाँ देकर वापस भेजते थे । इसीकारण मुहल्ले के लड़के बूढे को पानी में डुबोकर मरवा डालते हैं और आरोप इसके पति पर लगवाते हैं । इतना ही नहीं उसके पति की नाव तोड़ डालकर परिवार पर सामाजिक बहिष्कार भी डालते हैं । गाँव के बाहर झोपडी बंधवाकर रहने के बाद भी उसके पति के कामजाते ही घर में घुसकर खुले आम उसपर बलात्कार करते हैं । कमजोर होने के कारण न वह खुद इस अत्याचार का विरोध कर सकती है, न उसका पति विरोध कर सकता है।

इसलिए इन नारकीय यातनायों से छुटकारा पाने के लिए किसी से कुछ न कहकर अपने ही अंतर्द्वंद्व से पीड़ित यह नारी अंत में खुदखुशी करती है ।

नि ष्क र्ष :-

1) जोशीजी की कहानियों में विविध नारी - समस्याएँ चित्रित हुई हैं ।

2) जोशीजी की कहानियों में महानगरीय अविवाहित नारी का अंतर्द्वंद्व चित्रित है ।

3) पति - पत्नी के टूटे संबंधो के प्रति निराशा प्रकट करके उनके संबंध बने रहने का समर्थन ।

4) महानगरीय विधवा नारी का अंतः संघर्ष चित्रित है ।

5) पहाड़ी विधवाओं पर हुए अत्याचार और उनके अंतर्संघर्ष का चित्रण ।

6) जोशीजी की पहाड़ी और महानगरीय नारी अन्याय का विरोध नहीं करती ।

7) समाज के अत्याचार से पीड़ित नारी का चित्रण ।

8) विजातीय विवाह के बाद समाज के विरोध से उदास, थकी नारी की अतर्द्वंद्वता ।

9) नारियों में जिजीविषा है ।

10) अत्याचार सहनेवाली स्त्रियाँ महानगरीय निम्न मध्यवर्ग की और पहाड़ी की अज्ञानी, अनपढ, दलित वर्ग की है ।

11) परंपरागत विवाह संस्था के नियमों का विरोध ।

12) ससुराल के अत्याचार का विरोध और परित्यक्ता स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण ।

13) अंतरजातीय और विधवा - विवाह का समर्थन ।

इ) प्रेम की समस्या पर आधारित कहानियाँ :-

सच्चा प्रेम दिखावटी नहीं होता, उसमें त्याग की भावना ही अधिक होती है । प्रेम अनायस हो जाने के कारण उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता, टूटना और अंतर्द्वंद्व ही अधिक होता है, क्यों कि असफल प्रेम को भुगतनेवाला व्यक्ति अकेला ही होता है । इसलिए वह अपने आपसे ही अधिक संघर्ष करता है । यहँ दृश्य हम जोशीजी की कई प्रेम कहानियों में देख सकते हैं । जोशीजी की प्रेम कहानियों में नर - नारी का निजी जीवन एवं रहस्यमय अंतरंग प्रस्तुत हुआ है । जोशीजी की नारी अपना प्रेम निभानेवाली एक आदर्श और त्यागी नारी है, जिसका विवेचन हम निम्नप्रकार दे रहे हैं ।

1) **अहसास :-**

" अहसास " त्याग पर टिकी नारी के अकेलेपन की और सच्चे प्रेम का अहसास दिलानेवाली असफल प्रेम कहानी है । इस कहानी की नायिका अपने मन के अनुसार चलनेवाली, सौ - दो सौ अध्यापिका की नौकरी करनेवाली, प्रेम की खातिर अविवाहित रहनेवाली एक गरीब, स्वतंत्र और स्वाभिमानी नारी है ।

उसका प्रेमी इंग्लैंड से पढ़ - लिखकर आया हुआ एक राजनीतिक लीडर है यही उनके असफल प्रेम का कारण है । शादी और दो बच्चों का पिता बनने के बाद उसे अपने प्रेम का अहसास होता है और वह आठ सालों के बाद प्रेयसी से मिलने उसके घर आता है । तो वह कहती है " जीवन में एक स्थिति ऐसी आती है जब आदमी कुछ भी अनुभव नहीं करता ।"[15] उसके आने से और उसका अंतर्द्वंद्व बढता है । अब उसकी प्रेम के साथ - साथ सारी तमन्नाएँ भी मर चुकी हैं । जब वह पूछता है शादी करके जीवन क्यों नहीं काटती तो वह कहती है " जिंदगी तो कट गई भोजन का वक्त गुजर जाने के बाद जिस तरह भूख कम हो जाती है वैसा ही अब मुझे लगता है ।"[16] इसतरह सोचकर "वह" अंतर्द्वंद्व से पीड़ित है ।

अब भी वह उससे उतना ही प्रेम करती है जितना पहले करती थी । इसलिए उसके पास रहने की इच्छा प्रकट करती है । परन्तु अपने अंतर्मन से वह उदास होती है । वह उससे कहती है - " अब मैं अधिक बचनेवाली नहीं हूँ सच ! देखो ! इससे आगे रेखा नहीं है ।"[17] फिर भी वह उसके साथ खुल्लम खुल्ला घूमती है, बातें करती है, उसका मजाक उड़ाती है, उसकी दी हुई चीजों को लेती है । परन्तु घर आने के बाद उसे सुलाती है और आगंतुक की चीजें समझकर उसकी अटैची में रखकर नींद की गोलियाँ खाकर - अपना जीवन समाप्त करती है । इसतरह अपने प्रेम से जूझती नारी अंत में अपने प्रेम के प्रति ईमानदार रहती हुई अपने सच्चे प्रेम का अहसास नायक को देती है ।

इस प्रकार प्रेम का अहसास देकर जोशीजी ने आग्रह किया है कि प्रेम बिकाऊ चीज नहीं है, जब - चाहें तब वह नहीं मिलता है, उसे सम्मान प्राप्त होना चाहिए । " अहसास " कहानी के माध्यम से नारी के मन की पीड़ा चित्रित की है ।

2) **छोटी " इ " :-**

प्रेम के आत्मीय संबंध को अभिव्यक्त करनेवाली, नारी के त्याग पर टिकी हुई छोटी " इ " एक असफल प्रेम - कहानी है । छोटी " इ " अपने सच्चे प्रेम के लिए अंततक अविवाहित ही रहती है । इसलिए वह अपना जीवन अकेलेपन के दुःख में बिताती है ।

छोटी " इ " कहानी उपेन और छोटी " इ " की प्रेम - कहानी है । इसमें छोटी " इ " के प्रेम की सूक्ष्म अभिव्यंजना हुई है ।

उपेन याने कहानी के " मैं " के पड़ोस में छोटी " इ " रहती थी । वह आयु से उपेन से भी बड़ी थी । उपेन उसे बहुत अच्छा लगता है । इसलिए बचपन से ही वह उपेन से प्रेम करती है । परन्तु उपेन हमेशा उससे दूर भागने की कोशिश करता है । छोटी "इ" अपनी ओर से प्रेम को पाने की चेष्टा करती है, पर संबंधों के स्तर पर उपेन उसे अपनत्व नहीं देता । इसलिए तो आधी आयु बीत जाने के बाद टीचर्स कान्फ्रेन्स में शिमला जाते समय छोटी " इ " उससे मिलने दिल्ली आ जाती है, तब उपेन को अजीब-सा लगता है और जब वे मुहल्ले से जाने लगते हैं तो उपेन भय महसूस करने लगता है कि कोई देख लेगा । कानपुर

में छोटी " इ " अस्पताल में है, यह मालूम होते हुए भी उपेन उसे देखने नहीं जाता । वह दिल्ली आने के बाद " आप " या " तू " या " तुम " आदि कुछ कहकर अपनी खुशी व्यक्त नहीं करता । परन्तु छोटी " इ " अपने लिए कई चीजें उससे लेती है, होटल में भोजन करते समय उसकी थाली से जूठी सब्जी के टुकडे उठा लेती है, उसके पानी का गिलास अपने होठों पर लगा देती है और उसके साथ पिक्चर देखते हुए अपनी ही वेदना में खो जाती है ।

इस कहानी में अकेलेपन की पीड़ा विद्यमान है, छोटी " इ " अब बिलकुल अकेली है । जब तक माँ - बाप थे, तब तक वह अपना गुजारा करती थी । पर अब उससे यह अकेलापन सहा नहीं जा रहा है, इसलिए अपनी वेदना प्रकट करते हुए छोटी " इ " उपेन से कहती है - " कभी पत्र ही भेज दिया करो, अच्छा लगता है, अकेलेपन का अहसास कुछ कम होता है ।"[18] इसतरह छोटी " इ " के अकेलेपन का दुःख अभिव्यक्त है ।

3) **बरस बीत गया :-**

" बरस बीत गया " कहानी मानसिक प्रेम से पीड़ित नारी की अंतर्वेदना की कहानी है, जिसमें सुमन का प्रेम भीतरी है, बाहरी तौर पर वह दिखाई नहीं देता । मन - ही - मन में यह प्रेम खत्म करने की बेला सुमन पर आती है । सुमन अनंत से प्रेम करती थी, जो उसके पड़ोस में रहता था और उससे प्रेम भी करता था । ये दोनों एक दूसरे के साथ बहुत प्रेम करते थे । परन्तु इनका प्रेम किसी को मालूम नहीं था । अनंत; मिलिटरी में लेफ्टिनेंट था और वालौंग के मोर्चे पर शत्रुओं से लड़ते लड़ते मर जाता है, जिसका सदमा सुमन को इतना पहुँचता है कि वह मानसिक रोग की शिकार होती है, क्योंकि वह अपने प्रेम की अभिव्यक्ति भी किसी के सामने नहीं कर सकती है । इसका असर उसके मन पर होता है और उनके मन में घुटन - सी पैदा होती है और उसे अस्पताल में रखना पड़ता है ।

अस्पताल में भी सुमन दवा आदि पीना छोडकर अनंत के दिये हुए अल्बम का सहारा लेकर अनंत की यादों में खोयी खोयी रहती है । उसकी यह बीमारी कम न होने के कारण डॉ॰ अशरफ उससे कहते हैं - " तुम अपने को चेंज करों, नहीं तो इलाज से कोई फायदा नहीं

होने का । तुम्हारे फादर चिंतित है । मदर बीमार रहती है -'तुम्हारे कारण - इसतरह तुम कब तक जिंदा रह सकोगी - - आय काण्ट से - ।"[19] इसतरह डॉ. अशरफ उसे प्रेम को भूलकर जीने की प्रेरणा देते हैं ।

सुमन के सामने प्रेमी मरने के कारण जीने - मरने की समस्या है । न वह जी सकती है न मर सकती है । एक ओर उसे डाक्टर का कहना ठीक लगता है । दूसरी ओर उसे मृत्यू से भय लगने लगता है । वह डॉक्टर के कहने के मुताबिक अपने प्रेमी को भूलकर जीने की कोशिश करने लगती है । उसी समय वह अखबार में अनंत का फोटो देखती है और बरस बीत जाने के दुःख से उसकी आँखों से आँसू टपकने लगते हैं ।

4) स्मृति - चित्र :-

" स्मृति - चित्र " नौकरी करनेवाली युवती के अकेलेपन को चित्रित करनेवाली एक असफल प्रेम कहानी है, जिसमें उसका प्रेमी उसके प्रेम को स्वीकारता नहीं ।

" इस कहानी की नायिका " वह " प्राध्यापिका की नौकरी करनेवाली एक अविवाहित युवती है । इसकी माँ मर गयी है । एक भाई जितेन को आगरा भेज दिया है, छोटा भाई दिग्गू ननिहाल में रहता है और पिताजी ऑफिस के कामों में रहते हैं । इसलिए वह अकेली घर की जिम्मेदारी निभाती है । " मैं " से उसका परिचय दो - तीन वर्षोंसे पत्र व्यवहार व्दारा हुआ है । अब उसे " मैं " से अपनापन लगने लगता है, जिसकी परिणति प्रेम में होती हैं ।

" वह " अपने अकेलेपन और प्रेम के कारण मन - ही - मन संघर्ष करती है । यह सोच कर कि प्रेम की अभिव्यक्ति कैसे करु? इसी अंतर्द्वंद्व में वह " मैं " से मिलने दिल्ली आती है । दोनों मिलकर दिल्ली की यात्रा करते हैं । लेकिन प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं होती । उसे दिल्ली देखने का महत्व नहीं है । इसलिए अपने आत्मीय प्रेम व्यक्त करती हुई वह कहती है कि " आपसे भेंट हो गयी, यही क्या कम है ।"[20] वह होटल में खामोश बैठकर अधभरे गिलास में तैरते तिनके को देखती रहती है, जिससे उसके अकेलपन का संकेत मिलता है ।

अंत तक खामोश रहकर अपने गाँव जाते समय वह बडे साहस के साथ अपनी समस्यापूर्ति और अंतर्द्वंद्व को मिटाने के लिए " मैं " के हाथ में एक चिठ्ठी देकर कहती है-" आपके लिए लिखा था लेटर । फिर पता नहीं क्या सोचकर डाल नहीं पायी और अब पता नहीं क्या सोचकर स्वयं दे रही हूँ । इसका गलत अर्थ न लगाईगा । मैं कतई प्रॅक्टीकल नहीं - - - जाने के बाद आप भी क्या सोचेंगे ।"[21] इसतरह वह अपनी अंतर्मन की बात खोलकर प्रेम को अभिव्यक्त करती है, परन्तु " मैं " उसे रोकता नहीं ।

5) देखे हुए दिन :-

इस कहानी में एक मराठी नव - विवाहिता का अंतर्द्वंद्व चित्रित है । वह अपने पति के साथ सैर करने के लिए नैनीताल आयी है । वहाँ उसका परिचय " मैं " से होता है । वह " मैं " के प्रति आत्मीयता दिखाती है । इसलिए महिला की उपस्थिति में वहाँ का वातावरण रोमांचित होता है । " मैं " का मित्र किशन कहता है, यह लड़की पति की निगाहें बचा - बचाकर उसकी ओर देख रही थी, बहस में उसका साथ दे रही थी, उसने फेंकी टहनी गालों से लगा रही थी । और वह कहता है दूसरे दिन पति के साथ उसे मिलने जरूर आयेगी और होता ही ऐसे ही । वह सचमुच पति के साथ दूसरे दिन आती है, अचरज " मैं " से पहले किशन को होता है ।

इसतरह जोशीजी ने इस कहानी के माध्यम से सैर पर आई एक अपरिचित महिला के मन की पर्ते सूक्ष्मता से खोलने का प्रयत्न किया है ।

6) वह :-

विदेशी परिवेश को लेकर लिखी हुई एक भारतीय पुरुष और काहिरा की नारी के आत्मीय प्रेम से संबंधित यह कहानी है, जिसमें काहिरा की नारी का मानसिक द्वंद्व उद्घाटित हुआ है । इस कहानी में एक ऐसा प्रेम व्यवत हुआ है कि जिसमें दुबारा मिलने की आशा नहीं, शारीरिक आकर्षण नहीं और " मैं" से प्रतिक्रिया नहीं है । इसमें प्रेम का एक अनोखा रिश्ता प्रस्तुत है, जो लौकिक तौर पर टूटनेवाला है ।

इस कहानी की नायिका अंत में अपना प्रेम व्यक्त करती है जैसे " जिसकी तुम्हारी जैसी आकृति है । तुम्हारे जैसी भूरी आँखें हैं । परसो जब मैं यहाँ से हवाई जहाज में बैठूंगी, तो वे आँखें मेरे साथ होंगी, काहिरा के हवाई - अड्डे में मेरे घर के रास्ते में, घर में - ताउम्र मेरा पीछा करती रहेंगी ।"[22]

इसतरह एक विदेशी महिला के अंतर्द्वंद्व व्दारा जोशीजी ने वातावरण के वास्तविक चित्रण में प्रेम की एक झाँकी बड़ी सावधानी से उजागर की है ।

7) **दंशित :-**

" दंशित " नीरेन और कनु के अतर्द्वंद्व की कहानी है, जिसमें असफल प्रेम का उद्रेक हुआ है । नीरेन बेरोजगारी से पीड़ित एकयुवक है, जिसपर घर की जिम्मेदारी है । वह नौकरी की तलाश भी कर रहा है । अर्थ और बेरोजगारी उसके प्रेम में बाधा बनकर आती हैं, जिससे वह निराश, हताश हो गया है । यही कारण है कि कनु पर प्रेम होते हुए भी वह अपने प्रेम को व्यक्त नहीं कर सकता ।

कनु नीरेन के पडोस में रहनेवाली एक बड़े बाप की लड़की है । वह नीरेन से सचमुच प्रेम करती है, उससे विवाह के बारे में पूछती है, परन्तु नीरेन मौन असहमती के अतिरिक्त कुछ नहीं कहता । कनु को नीरेन से अपनत्व नहीं मिलता और कनु की शादी दूसरे के साथ होती है ।

नीरेन का भी एक सुंदर सा सपना था, घर बनाने का, स्कूटर लेने का, और शादी करने का । परन्तु अर्थ के कारण वह पूरा नहीं होता । उसका घर खरीदने से पहले ही बिक जाता है । इस घुटन को वह सहता है । नीरेन को यह दुःख है कि कनु शादी के बाद भूलकर भी उसकी और नहीं देखती ।

नीरेन की तरह कनु शादी के बाद भी निराश, उदास है । अपने घर में नीले पर्दे लगाकर कनु अपने प्रेम का अहसास दिलाती है । उसके घर में सुनहरे पिंजरे में एक मैना है, जो ऐसे चीखती रहती है जैसे कांटे की पीड़ा हो । यह चीखना कनु का ही है ।

8) **नाव पर बैठे हुए :-**

" नाव पर बैठे हुए " अपने परिवार के लिए प्रेम का त्याग करनेवाली " वसुधा " की कहानी है । इसमें वसुधा का अंतर्द्वंद्व और अकेलापन चित्रित है । वसुधा दर्शन से प्रेम करती है, पर शादी नहीं कर सकती । इसका कारण घर की जिम्मेदारी निभानेवाली वह बड़ी लड़की है, जो अपने माँ बाप और छोटी बहन के भविष्य के लिए शादी करने से इन्कार करती है । और अंततक इसी निराशा में प्रेम का दर्द सहती है । इसतरह अविवाहित वसुधा नैतिक मूल्यों का समर्थन करनेवाली एक आदर्श नारी हैं ।

9) **किसी एक शहर में :-**

यह प्रेम के लिए तरसनेवाली लड़की की कहानी है । वह सच्चे प्रेम करनेवाले प्रेमी की अपेक्षा करती है । वह दिल्ली में अपने परिवार की जिम्मेदारी संभलती, नौकरी कर रही है । उसका एक रिश्तेदार उसकी सहायता करता है । वह तटस्थ दृष्टि से उसकी प्रतीक्षा करता है । परन्तु नायिका को लगता है, वह अपना प्रेम व्यक्त करे । इसलिए वह कहती है - " मैं सोच रही थी, आप आज बेहद नाराज होंगे । कहेंगे कब से तुम्हारी प्रतीक्षा में खड़ा हूँ । लेकिन तुम बड़ी " वो " हो । - - - - सच्ची कभी कितना अच्छा लगता है कि कोई हमें " वों " कहे । कोई हमारी प्रती-क्षा करे । कभी कोई नाराज होकर उलाहने दे - कभी कभी तो मन तरस उठता है ।"[23] इसमें सच्चे प्रेम की इच्छा करनेवाली नारी की वेदना है ।

10) **स्व भा व :-**

" स्वभाव " कहानी में मानसिक प्रेम की अपेक्षा शारीरिक प्रेम पर अधिक जोर दिया गया है । यह भोली - भाली अविवाहित ग्राम युवती और विवाहित भाई साहब की शारीरिक प्रेम पर आधारित रोमांचक कहानी है । गिलहरी को जितेन अपनी बीमार पत्नी की सेवा करने के लिए ले आता है । परन्तु जितेन की पत्नी को शांति के बदले मानसिक त्रास ही अधिक होता है, क्योंकि उन दोनों में धीरे - धीरे शारीरिक आकर्षण बढ़ने लगता है, जितेन उसे लवली - लवली कहने लगता है जिससे गिलहरी के मन में जितेन के प्रति सूक्ष्म प्रेम - भावना आने

लगती है । अंत में यह ग्रामीण युवती अपना मोहक गंध छोड़कर चली जाती है ।

11) **अ न चा हे :-**

प्रस्तुत कहानी में एक विवाहित बहन की मानसिक व्यथा प्रकट हुई है । इस कहानी की नारी विवाहित है । फिर भी पड़ोसी के अच्छे बर्ताव के कारण आकर्षिक होकर वह अपने आपको बदली तो है ही परन्तु साथ - साथ पति और बच्चे को भी बदलने की कोशिश करती है, जिससे पति का विश्वास संदेह में बदलता है । वह उसे रोज पीटने लगता है । इसी कारण पड़ोसी हमेशा के लिए घर छोडकर चला जाता है । आंतरिक प्रेम - संबंध प्रस्थापित करनेवाली है, जिसमें वासनारहीत सच्चा प्रेम प्रकट हुआ है । ऐसे प्रेम को समाज और पति नहीं मानते । इसमें पुरुष - प्रधान संस्कृति में फंसी नारी की अंतर्वेदना, जो पड़ोसी के साथ, पुरुष होने के कारण बोल नहीं सकती, प्रेम नहीं कर सकती । इसमें अलग ढंग का प्रेम प्रस्तुत है । जोशीजी ने इस कहानी के माध्यम से शारीरिक प्रेम की अपेक्षा मानसिक प्रेम को अधिक महत्व दिया है ।

12) **आदमियों के जंगल में :-**

इस कहानी में शकुंत में मानसिक प्रेम का साक्षात्कार हुआ है । शकुंत एक पढ़ी - लिखी युवती है, जो पहाड़ी से अपने घर आये सुशिक्षित बुध्दिजीवी बेकार युवक जितेन से प्रेम करती है । वह अपने जेब खर्च के लिए दिए पैसों में से बचाकर उसे एकाध रुपया देती है, माँ - बाप के पीछे उसे जूते खरीदकर देती है । उसकी किताबे ठीक - ठाक करना, फटे कपडे सिलकर देना, नौकरी ढूँढने के लिए प्रेरणा देना, उसे विवाह की बात पूछना, उसे देखकर लजाना आदि बातों से उसका जितेन पर का प्रेम व्यक्त होता है । लेकिन इनका प्रेम सफल नहीं होता, क्योंकि जितेन को नौकरी नहीं मिलती, वह पागल - सा बनता है और उनके प्रेम का अकुंर उगाने से पहले ही नष्ट हो जाता है ।

नि ष्क र्ष :-

1) जोशीजी की प्रेम कहानियों में अकेलापन, घुटन, असफलता, निराशा और मानसिक दु:ख के दर्शन होते हैं ।

2) जोशीजी की नारी अपना प्रेम व्यक्त करती है, परन्तु नायक उसे अपनापन नहीं देता ।

3) जोशीजी का नायक अपनी प्रेम - भावना कभी व्यक्त नहीं करता और स्त्री के प्रेम का स्वीकार भी नहीं करता ।

4) जोशीजी की नारी अपने प्रेम के लिए खुद की आहुति देनेवाली त्याग की मूर्ति है ।

5) जोशीजी की नारी वासनारहीत आत्मीय प्रेम - संबंध जोड़नेवाली है ।

****

xxx ई xxx नौकरी पेशा नारियों की समस्या xxx

भारत में आजकल नारी, पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर हर एक क्षेत्र में काम करने लगी है । परन्तु आज भी स्त्री की ओर देखने की पुरुषों की दृष्टि बदली नहीं है । स्त्री ऑफिस में काम करनेवाली हो या खेती - बाडी में उसे एक ही दृष्टि से देखा जाता है । यही दृष्टि स्त्री की समस्या बन गयी है ।

हिमांशु जोशीजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से महानगर में काम करनेवाली स्त्रियों की इसी समस्या पर प्रकाश डाला है । उनकी " भेड़िए ", " चील ", " **किसी एक शहर**, में " नाव पर बैठे हुए " कहानियाँ इसी समस्यापर आधारित हैं । जोशीजी की कहानियों में **महानगर** में रहनेवाली अविवाहित शिक्षित नौकरी करनेवाली स्त्री की समस्या अधिक तर है, जिसका जिक्र हम आगे कर रहे हैं ।

1) **भेड़िए** :-

" भेड़िए " नौकरी करनेवाली एक अपंग युवती की कहानी है । इस कहानी की नायिका मिस नंदिता का एक हाथ कट गया है, वह दूसरों पर बोझ बनना नहीं चाहती । इसलिए वह अपनी जिंदगी स्वावलंबन से गुजारने के लिए सरकारी नौकरी का सहारा लेती है । उसे अपने पहले ही दिन के अनुभव ने अचरज के साथ - साथ भय एवं चिंता में डाल दिया ।

ऑफिस में आते ही मिस नंदिता आपनी निगाहों से ऑफिस की दुनिया को देख लेती है । उसे कुछ अजीब - सा लगता है । ऑफिस में असिस्टंट उसे बुलाकर पांच दफा - चाय देता है और सुबह चायके साथ - साथ बर्फी भी खिलाता है और परिवार की पूछताछ करता है । वह फाईल की टैग बाँधने को कहकर उसका मजाक भी उड़ाता है कि वह नाडा बांधना नहीं जानती । डिलिंग क्लर्क अंगूठे का निशाना लगाते समय उसकी उंगलियों को दबाता है । सुपरिटेंडेंट उसे सीधे घर बुलाता है ।

पुरुषों के साथ - साथ ऑफिस में काम करनेवाली स्त्रियाँ भी असभ्य वर्तन और अश्लील बातें करना, दूसरों का मजाक उड़ाना आदि व्यवहार करती हैं, जिससे मिस नंदिता सोचने लगती है कि इनके साथ अब दिन कैसे गुजारें ? यहाँ तक उसका मन चपल होता है कि अब नौकरी करूँ या छोड़ूँ ? ऑफिस के वातावरण और अत्याचार से उसका मानसिक संतुलन ही बिगड जाता है । अब दिन कैसे कटेंगे ? जिंदगी कैसी बितेगी ? इसी मानसिक व्यथा में सोचती - सोचती वह अकेली घर जाती है ।

ऑफिस में नैतिकता के अभाव के कारण मिस नंदिता को नौकरी करना असंभवसा लगता है । इसी अंतर्द्वंद्व में मिस नंदिता पीड़ित है ।

2) **चील :-**

" चील " कहानी में ऑफिस के वातावरण में विचरनेवाली मिस विंद्रा की मानसिक स्थिति का रोमांचक चित्रण है । मिस विंद्रा पिता की मृत्यु, भाई की बीमारी और आर्थिक परेशानियों से लड़ती मजबूरन नौकरी करनेवाली युवती है ।

वस्तुतः ऑफिस में काम कम और भाग - दौड़ ही अधिक है । इसी भाव - भंगिमा में वह सुबह से शाम तक काम करती हुई थक जाती है । इस कहानी में मिस विंद्रा की यही व्यथा प्रस्तुत है ।

असिस्टेंट निरीह भाव से मिस विंद्रा की ओर देखकर फाइल लेकर खड़ा हो जाता है, एक ओर फोन आता है तो दूसरी ओर पी. ए. का बुलावा आता है । पी. ए. का महत्वपूर्ण काम मिस विंद्रा के सिवा नहीं होता ।

बॉस अनावश्यक फाइल के डिस्कसशन के लिए बुलाता है, ज्युनियर असिस्टेंट फाईल ढूंढने के बहाने उसके कमरे में आता है, बीमार भाई को बंबई ले जाने के लिए लॉंग लीव लेते समय सहानुभूति जतलाने के बहाने उसके घर बॉस आना चाहता है, जो इसके लिए एक समस्या है, स्टेनो गणेशन विंद्रा का मुख ताकता खड़ा रहता है । इसतरह एक के बाद एक आफतें मिस विंद्रा पर आती हैं ।

अंत में पी. ए. के फोन के साथ अंधेरा छाता है और मिस विंद्रा चीलों की तरह बिखरी फाईलों पर, अपना माथा कभी न उठाने के लिए टिकाती है । मिस विंद्रा मजबूरन अपनी इज्जत बेचती है ।

3) किसी एक शहर में :-

महानगरीय नारी नौकरी करते समय अपने दप्तर में टिकने के लिए कौनसी यातनाओं को सहने के लिए अभिशप्त है, इसका मार्मिक चित्रण " किसी एक शहर में " हुआ है । इसमें निम्न मध्यवर्गीय जीवन की घुटन स्पष्ट हुई है । एक बेसहारा युवती तीसरी कक्षा में पढनेवाले अपने भाई और बीमार माँ के साथ किन परिस्थितियों से गुजारा करती है । यही उसके अन्तर्द्वंद्व की कहानी है ।

" वह " एक प्राइवेट कंपनी में काम करती है, जिसके दोन पार्टनर हैं लालाजी और सेनगुप्ता । कोई लड़की अपनी मरजी से आती है तो लालाजी उसे घूमने ले जाता है । वह किसी को तंग नहीं करता ।

परन्तु सेन गुप्ता, जिसे " वह " गोल कीपर कहती है, लड़कियों से बिहेव अच्छा नहीं करता वह तन्खाह कम देकर अधिक पर दस्तखत करवाता है और लंच के समय " वह " को अंदर बुलाकर अपने होठों को चाय का प्याला लगाने के लिए कहता है । पास आने के लिए कहकर नब्बे के सौ करने की बात कहता है । परंतु वह उनके पास नहीं जाती । ऑफिस में काम करनेवाली किटी प्रेगनैंट है, यह सुनते ही " वह " को धक्का लगता है ।

घर की गरीबी में राशन के पैसे कैसे चुकाऊ इसी चिंता में उलझी नारी ऑफिस के अनुभव से निराश होती है । उसके सामने परिवार को संभालने की और खुद की रक्षा करने की चिंता है ।

4) नाव पर बैठे हुए :-

" नाव पर बैठे हुए " की वसुधा आर्थिक तंगी के कारण " दूध डेपो " पर काम करती है और टायपिंग सीखने जाती है, उस समय उसके सामने खड़ी होनेवाली समस्याओं का चित्रण इस कहानी में है ।

दूध डेपो पर दूध की बोतलें थमाते समय मर्द उसकी अंगुलियों को छू लेते हैं । टायपिंग सीखते समय बगल में बैठनेवाला लड़का कुहनियों को छुता है, चुपके से पाँव दबा देता है, कागज में कुछ लिखकर वसुधा की ओर चुपके से बढ़ा देता है, जिसके कारण वह तीन चार दिन टायपिंग के लिए नहीं आती । मालिक भी उसकी ओर बुरी निगहों से देखता है, जिससे वह अंदर - ही-अंदर घुटन महसूस करती है । उसे अपनी मॅडम की बात याद आती है किं " दुनिया में हर कोई चीज मिल सकती है, लेकिन उसकी कीमत चुकानी पड़ती है ।"[24]

अब किस - किस की कीमत कहाँ तक चुकानी पड़ेगी इसी अंतर्वेदना में वह घर आती है ।

निष्कर्ष :-

1) जोशीजी की कहानियों में नौकरी पेशा औरतें शिक्षित और अविवाहिता है ।

2) जोशीजी की नारियाँ घर की जिम्मेदारी संभालनेवाली हैं ।

3) वे ऑफिस में काम करते समय मानसिक और शारीरिक अत्याचार सहती हैं ।

4) स्त्रियों के अंतर्द्वंद्व,घुटन,अकेलेपन और निराशा का चित्रण है ।

5) इन कहानियों में पुरूषों की नजरों में वारसा का चिन्ह प्रदर्शित है ।

****

))) बेरोजगारी की समस्या)))

आधुनिक युग में भारत के सामने बेरोजगारी की समस्या अत्यंत जटिल बनकर खड़ी है। देश की बढ़ती जनसंख्या, गरीबी, राजनीतिज्ञों की भ्रष्ट.निती शिक्षा - नीति, लड़कियों का नौकरी में प्रवेश, घूसबाजी, रिश्वत और युवकों का नौकरी की ओर अधिक ध्यान आदि कारणों से नौकरी मिलना कठिन हो गया है । इसलिए युवकों को नौकरी के लिए कठोर तपस्या करनी पड़ रही है ।

जोशीजी ने अपनी कई कहानियों के माध्यम से आधुनिक बेरोजगारी की जीवंत समस्या पर प्रकाश डाला है । जोशीजी की कहानियों में नौकरी के बिना संवेदन शून्य, उदास, हताश हुए युवकों का चित्र ही उभरा है ।

नौकरी के लिए युवकों को क्या नहीं करना पड़ता - इसका यथार्थ दर्शन जोशीजी की कहानियों में होता है ।

1) आदमियों के जंगल में :-

यह एक बुध्दिजीवी युवक की मार्मिक कहानी है, जिसमें पहाड़ से अपना भविष्य बनाने के लिए महानगर आये बेकार युवक का अंतर्द्वन्द्व चित्रित है । नौकरी के क्षेत्र में बुध्दिजीवी युवक का स्थान गौण बन गया है, घूसखोरी, रिश्वत के बिना सिर्फ ज्ञान के आधार पर नौकरी नहीं मिल सकती । इसलिए पढ़ा - लिखा आदमी उदास, थका, पागल - सा बन गया है । यही हालत इस काहनी के नायक जितेन की है ।

जितेन पहाड़ से नौकरी की खोज में आया एकपढ़ा - लिखा युवक है - जिसपर घर की जिम्मेदारी और उम्मीदें हैं । माता - पिता आर्थिक संकट से छुटकारा पाने के लिए उसकी नौकरी की आस लेकर बैठे हैं । परन्तु यहाँ दर - दर भटकने के बाद भी उसे नौकरी नहीं मिलती । सरकारी नौकरी में आयु की मर्यादा होती है और बाद में प्राइवेट नौकरी नहीं मिलती । अपने परिवार के लिए वह कुछ करना चाहता तो है, लेकिन क्या करे ? का प्रश्न

उसके सामने है । क्योंकि उसकी सारी तम्मनाएँ मर चुकी हैं । उदासी के कारण कुछ कर सकने का सामर्थ्य उसमें नहीं है ।

इसलिए जितेन नौकरी का कहीं मौका न दिखने के कारण पढ़ना, घूमना बोलना और खाना भी छोड़ देता है । अंत में उसकी स्थिति पागलसी होती है ।

इससे स्पष्ट होता है कि सत्यानाशी बेकारी और अनिश्चित भविष्य की चिंता में युवक संवेदन शून्य एवं पागल बनता जा रहा है और दुनिया आदमियों का जंगल होती जा रही है ।

2) दं शि त :-

इस कहानी में परिस्थिति का ठंडे दिमाग से मुकाबला करनेवाले युवक की मनस्थितिका चित्रण है । इस कहानी का निवेदक नीरेन भयावह और विषम परिस्थिति से पीड़ित युवक है। बेरोजगारी के कारण वह हताश, निराश और कुंठित बन गया है । वह अपनी लड़ाई लड़ नहीं सकता । उसे गुस्सा नहीं आता । अकारण वह किसीसे लड़ना नहीं चाहता और अपने मन की बातें भी किसी के सामने प्रकट नहीं करता । खुद ही अपने अन्तर्द्वंद्व को झेलना चाहता है ।

नीरेन अपने घर में कमानेवाला अकेला है, जिसपर घर की सारी उम्मीदें हैं । नीरेन पहले कच्ची नौकरी करता था, पर वह भी छूट गयी और घर पर पहाड़ टूट पड़ा । इसी चिंता में वह दिनभर धूलभरी सडकों पर मारा - मारा फिरता हुआ घर आता है तो बाबूजी व्दार पर खड़े - खड़े पूछते हैं - " कुछ मिला "? इन दो शब्दों का चक्रव्यूह वह भेद नहीं पाता । इसी वाक्य में " आगे क्या करुँ " की वेदना भरी है । उसके सामने जीने के लिए कोई मार्ग ही नहीं । जोशीजी ने नीरेन के माध्यम से बेरोजगारी की समस्या पर प्रकाश डाला है ।

3) **सीमा से कुछ और आगे :-**

यह बेरोजगारी से पीड़ित जितेन के अकेलेपन की कहानी है । वह नौकरी की तलाश

BARR. B... ...EKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

में महानगर आया है । नौकरी न मिलने के कारण वह न ठीक तरह से महानगर में रह सकता है न अपने घर जा सकता है । अपने आप से उलझा हुआ खामोशी से दुःख सहता अपना जीवन बिताता है । वह इतना निराश हो गया है कि कभी बोलने के लिए अपना मुख नहीं खोलता ।

जितेन के पिताने कितनी उम्मीदें मन में रखकर उसे पढ़ाया - लिखाया था । परन्तु वह अपना ही पेट भरने में असमर्थ था । वह ऐसी जगह में रहता है जहाँ एक भैंसे बाँधी जाती है । अपने खाने - पीने का इंतजाम भी वह नहीं कर सकता । इसकी बुरी हालत देखकर उसके पिता कितने दुःखी होते हैं । लज्जावश वह अपने गाँव भी नहीं जा सकता । उसकी स्थिति तो त्रिशंकु - सी हो गई । बेकारी के कारण वह अपना सिर तक उठा नहीं सकता । इसतरह पहाड़ से आये युवक अपनी अंतर्पीड़ा में ही जिंदगी गुजरते है ।

4) **फासला :-**

" फासला " कहानी में महाभयंकर बेकारी के कारण अपनी टाँग की बली देकर नौकरी करनेवाले पहाड़ी युवक की अंतर्पीड़ा चित्रित है ।

इस कहानी का नायक दसवीं पासकर महानगर में नौकरी की तलाश में आया हुआ । एक युवक है । उसपर छोटे भाई - बहन और बीमार माँ की जिम्मेदारी है । दो साल नौकरी ढूँढने के बाद भी उसे नौकरी नहीं मिलती । चाहकर भी वह नहीं मर सकता था । अपाहिज होकर नौकरी करने के सिवा उसके सामने दूसरा मार्ग ही न था । इसलिए वह जीने के लिए जान - बूझकर ट्रक के नीचे आकर अपनी टाँग कटवकाता है, जिसके कारण उसे सरकारी नौकरी मिलती है । " कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है, " इस उक्ति के अनुसार उसे जीने के लिए ही जीवन खत्म करना पड़ता है ।

इसी अंतर्द्वंद्व में यह युवक जीने - मरने का फासला समाप्त कर जीने के लिए विवश होता है ।

5) **झुका हुआ आकाश :-**

यह भविष्य की चिंता से निराश, हताश हुए एक बेकार युवक की कहानी है, जो नौकरी न मिलने के कारण रोज सुबह पेपर खोलकर " वाँटेड " के हर कॉलम को अंडरलाइन करता है ।

छुट्टा इस कहानी का नायक है, जो बहुत कुछ करना चाहता था । लेकिन जिंदगी के नये मोड़पर ही वह हार जाता है, कुछ करने की उम्मीदें नष्ट होती हैं और वह मानसिक व्याधी से पागल - सा होता है ।

6) **लिखे हुए शब्द :-**

इस कहानी में बेरोजगारी से पीड़ित युवक की अंतर्वेदना प्रस्तुत है, जो नौकरी न मिलने के कारण भिख माँग अपना निर्वाह करता है ।

इस कहानी में पंद्रह साल का युवक पहाड़ से नौकरी की तलाश में लखनऊ, कानपुर, बरेली आदि स्थानों पर भटकते भटकते दिल्ली आया है । परिवार में कमानेवाला वह अकेला है, उसपर अंधी माँ और तीन बहनों की शादी की जिम्मेदारी है । पाकिस्तान की लडाई में बड़ा भाई शहीद हुआ है, परन्तु इन्हें मिलिटरी से कुछ सहायता नहीं मिलती ।

वह लड़का यहाँ तक कि बर्तन माँजने के लिए भी तैयार है, फिर भी उसे काम नहीं मिलता । आत्महत्या के बावजूद भी वह जिंदा है, इसलिए भीख माँगकर वह अपनी जिंदगी गुजारता है ।

7) **सिमटा हुआ दुःख :-**

" सिमटा हुआ दुःख " कहानी की नारी का यह दुःख हैं, कि वह अपने प्रोफेसर की खिदमत नहीं कर सकती, जिसके कारण उसे क्लास नहीं मिलता और उसे नौकरी भी नहीं मिलती । जो लड़की प्रोफेसर की खिदमत करती है वह दिमाग से कमजोर हो तो भी उसे क्लास मिलता है और नौकरी भी ।

9) **नाव पर बैठे हुए :-**

इस कहानी की वसुधा की कच्ची नौकरी है, जिससे वह अपने घर की सारी जिम्मेदारी उठाने में असमर्थ है । इसलिए उसे पक्की और अच्छी नौकरी की तलाश है । परन्तु नौकरी की खोज किधर ? किसतरह करें ? इसी अंतर्द्वंद्व में वह है । क्योंकि एक निम्नवर्ग के नैतिक दृष्टि से देखनेवाली लड़की को नोकरी मिलना उतना आसान काम नहीं रहा है ।

*** **नि ष्क र्ष :-**

1) निम्न मध्यमवर्गीय युवकों और युवतियों की बेरोजगारी की समस्या चित्रित है ।

2) बेरोजगारी के कारण घर की जिम्मेदारी संभालने में असमर्थ शिक्षित पहाड़ी युवकों का अंतर्द्वंद्व चित्रित है ।

3) बेरोजगारी की दिन - ब - दिन जटिल बनती जा रही समस्या का विविधोन्मुखी चित्रण ।

4) मनुष्य की हताशा, निराशा, किंकर्तक विमूढ़ता और घूटने टेकने को मजबूर मानस्कि स्थिति का चित्र ।

****

xxx ऊ - महानगरीय समस्या - xxx

महानगरों में टूटते हुए आत्मीय संबंधो की समस्या अधिक दिखाई देती है । महानगरीय मनुष्य अर्थ के कारण रिश्तों से और मानवीयता से टूटता हुआ अकेला होता जा रहा है । परिस्थिति ने उसे ऐसा बना दिया है कि उसके मन में किसी के प्रति संवेदना ही नहीं रही है । यही मानसिक द्वंद्व जोशीजी की महानगरीय बोध की कहानियों में चित्रित है ।

हिमांशुजीने महानगरीय समस्या को बड़ी सहजता से चित्रित किया है । अनुभव के तौरपर जोशीजी ने महानगर का जीवन जीया और देखा भी है । इसलिए हम महानगरीय टूटे हुए जीवन का वास्तविक चित्र इनकी कहानियों में देख सकते हैं । महानगरीय परिवेश में लिखी इनकी कई कहानियाँ अपना निजी महत्व भी रखती हैं ।

1) **" यह सब " अ " संभव है "** :-

महानगर के आतंकवादी वातावरण में जीये हुए, संवेदन शून्य आम - आदमी की मर्मांतिक पीड़ा का चित्रण करनेवाली " यह सब " अ " संभव है " कहानी है । सरकारी ऑफिस में काम करनेवाले एक आदमी के अन्तर्द्वंद्व में ही सारे महानगर के माहौल चित्र समेटा है । " यह सब " अ " संभव है " कहानी का वातावरण, प्रदर्शन, गोली, आँसू, गैस, कर्फ्यू, मौत, हड़ताल और विसंगतियों से भरा हुआ है । इस वातावरण में आम - आदमी का अस्तित्व कहीं दिखाई नहीं देता, उसमें जिन्दादिली ही नहीं है ।

पंद्रह अगस्त से पूर्व भी अराजकता का वातावरण था, लेकिन उसमें स्वतंत्रता प्राप्ति की चाह और मर मिटने की जिद थी । लेकिन अब मनुष्य हर तरह से टूट रहा है । आदमी - आदमी के बीच के मानवीय संबंध टूट रहे हैं, जैसे अश्रुगैस से प्रदर्शनकारियों को मारना, पुलिस और साधुओ के बीच कुश्ती का होना, आदमी और चपरासी के बीच खाई का पैदा होना, बसों का बंद होना, कर्फ्यू लगाना, विद्यार्थियों को कागज के बदले इस्पात के कारखाने खुलवा देने की आवश्यकता लगना, भ्रष्टाचारियों और चोरों को पकड़ने के बजाय पुलिस को विद्यार्थियों का पीछा करने में गौरव मानना आदि तनावग्रस्त लक्षण यही दर्शाते हैं कि सामनीय

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

संबंधो के अभाव से देश की सुरक्षा कैसे होगी ? आम-आदमी कैसे जियेगा ? लेखक इन्हीं प्रश्नों को उठाते हुए कहते हैं कि " जहाँ लोग जीना नहीं चाहते, वे मरने का महत्व कैसे समझ सकते हैं । अतः मर ही नहीं सकते यह सब " अ " संभव है ।"[25]

2) **जीना - मरना :-**

" जीना - मरना " कहानी महानगर में कॉम्प्युटर की तरह जीवन बितानेवाले अल्पवेतन भोगी मध्यवर्गीय परिवार के आदमी की पीड़ा को चित्रित की है, जिसमें अर्थ के कारण मनुष्य अपने अस्तित्व से संघर्ष कर रहा है । महानगर में मध्यवर्गीय आदमी की स्थिति कुछ अजीब - सी है । वह हर समय मुसीबतों से घिरा रहता है । उसे सोचने के लिए समय ही कहाँ मिलता है । इस कहानी का वर्मा ऑफिस के कामो में अपनी पत्नी को पत्र लिखते समय नाम ही भूल जाता है । पाँच मिनट सोचने के पश्चात् मुश्किल से लिफाफे पर पत्नी का नाम लिखता है । महानगरीय आदमी परेशानियों से गुजरते हुए कई बाते भूल ही जाता है ।

महानगरीय और परिवार की समस्याओं में कहानी का " मैं " उलझा हुआ है । उसके सामने बरखा के विवाह की, बच्चे की बीमारी की, अस्तित्व को बनाए रखने की और आर्थिक विपन्नता को देखकर मेहमानों की प्रतिक्रिया की समस्याएँ पैदा हुई हैं । इस कहानी में " मैं, " उसकी पत्नी और बहन इन " तीनों " का अंतर्संघर्ष प्रस्तुत है । अन्तर्पीडाओं में उनको जीने - मरने का अंतर समझ में नहीं आता । " विशेषतः महानगर में रहनेवाला मध्यवर्गीय आदमी अपने आपसे अधिक संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है ।

3) **बूंद पानी :-**

इस कहानी में पहाड़ से आकर महानगर में बसे हुए विश्वेश्वर की अंतर्वेदना चित्रित है । एक ओर महानगरीय आर्थिक संकट और दूसरी ओर भाई और पत्नी के बीच विश्वेश्वर संघर्षशील है । इसमें ठंडे रिश्तो का संबंध स्थापित है ।

विश्वेश्वर का बड़ा भाई गाँव छोड़कर हमेशा के लिए अपने बच्चों के साथ अपनेपन से

अपने भाई के पास आता है, जिसका विश्वेश्वर के सिवा इस महानगर में कोई नहीं । परन्तु विश्वेश्वर की पत्नी कालिंदी उसके आते ही उदास हो जाती है । वह रोज - रोज की मेहमानदारी से ऊब चुकी है । अर्थ की इस हालत में वह किसी से संबंध रखना नहीं चाहती । लेकिन अर्थ के कारण ही आत्मीय संबंध और आस्था टूटती जा रही है । वही आस्था, प्रेम और आत्मीयता पहाड़ से आए विश्वेश्वर के भाई में है । वह विश्वेश्वर से कहता है "अरे बिसेसर ! तू क्या समझता है, पढ - लिखकर ही पैसे कमाये जाते हैं । तू छोड़ नोकरी ! मैं इसी से अभी भी तुझसे दुगुना कमा सकता हूँ, दुगुना ! अरे पगले ! तू क्यों पैसे - पैसे के लिए इता परेशान रहता है । अभी तो में जिन्दा हूँ । फिर मेरे होते हुए तुझे क्या चिन्ता है, रे !"[26]

पहाड़ी लोग आत्मीय संबंध बनाए रखने की कोशिश करते है । परन्तु महानगरीय लोगों में आत्मीयता, आस्था का अभाव है । इसतरह " बूंद पानी " में महानगर के टूटते रिश्ते का बोध मिलता है ।

4) झुका हुआ आकाश :-

प्रस्तुत कहानी में महानगरों में रहनेवाले पहाड़ी युवकों की मानसिक पीड़ा प्रस्तुत है । इस कहानी में अंतर्वेदना से पीड़ित दो भाई हैं । बड़ा भाई नौकरी करके घर - गृहस्थी संभलता है । तो दूसरा युनिव्हर्सिटी में अैडमिशन न मिलने के कारण आगे पढ़ने का सपना चूर - चूर होने से पागल - सा बन गया है ।

बडे भाई को छुट्टे को युनिव्हर्सिटी में अैडमिशन दिलाने, पहाडी माँ बाप को सुखी करने, मेहमानों की देखभाल करने और परिवार संभलने की चिंता है । इसतरह यह महानगरीय समस्याओं में उलझे हुए भाईयों की मार्मिक कहानी है, जिसमें मानसिक दुःख के अलावा कुछ नहीं है ।

5) सीमा से कुछ और आगे :-

इस कहानी में नौकरी की तलाश में महानगर आए एक पहाड़ी युवक का मानसिक दर्द

चित्रित है, जो महानगर में रहकर भी अपना भविष्य नहीं बना सकता, इतना ही नहीं अपनी रोजी - रोटी का प्रश्न भी हल नहीं कर सकता । हालात में उसे इतना अमानवीय बना दिया है कि, वह महानगर में एक भैंस के गोठ में रहकर अभावग्रस्त जिंदगी गुजारता है ।

6) **नयी बात :-**

हिमांशु जोशीजी की " नयी बात " कहानी महानगर के जीवन में निहित अंतर्विरोधी द्वंद्वों को उद्घाटित करती है । इस कहानी का निम्न मध्यवर्गीय आदमी महानगरीय आर्थिक परिस्थिति से और पहाड़ी समस्याओं से जूझता है । इस कहानी में उसकी द्विधा मनःस्थिति का सूक्ष्म चित्रण हुआ है ।

चंद्रावल्लभ उपरेती की बहन केतकी की शादी गाँव में न होने के कारण वह और उसके ठुल कका दिल्ली आ जाते हैं और मुसीबत शुरू होती है । दिल्ली को देखते ही ठुल कका दिल्ली को स्वर्ग मानने लगते हैं और स्वर्ग जैसी दिल्ली में रहने वाले अपने बेटे उपरेती को गाँव की एक - एक नयी बात कहने लगते हैं इस कहानी की प्रत्येक बात नयी है, जिसको सुनकर उपरेती थक जाता है । जैसे दस - दर्जा पढ़ने के बाद पहाड़ी युवती की शादी नहीं होती; दप्तरी से तरक्की मिलकर चंद्रा ज्युनिअर क्लर्क बनता है, केती को गाँव में बलौक रात के समय पढ़ाते थे, बूढ तांगेवाला केती की पीठ पर हाथ फेरता है, कका घागरे के किरपे लाने, केती को फॅशन के कपडे सिलवाने और घरवालों की मदद करने को कहता है । पत्नी गोविंदी केती की बेशरम बातें कहती है । कका खासी की बोतल और उनी वास्कट भेजने को कहकर केती को पढ़ाने और शादी करने के साथ - साथ अपनी लड़की की शादी करने भी कहता है ।

इसतरह महानगर में रहनेवाला उपरेती नयी बातें सुन - सुनकर हैरान हो जाता है और इसी चिंता में घर लौटता है कि पत्नी गोविंदी कौनसी नयी बात कहेगी ?

7) **एक समुद्र भी :-**

" एक समुद्र भी " हिमांशु जोशीजी की महानगर बोध की आधुनिक कहानी है, जिसमें मानवीय संबंधों की अंतर्विरोधात्मक विसंगति का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत है ।

इस कहानी का नायक तापस अपने अस्तित्व, आदर्श, नैतिकता और मानवता के लिए लड़ने वाला एक युवक है । वह महानगर में रहता हुआ मानवीय संबंधो का संरक्षण न पाकर निराश, एकाकी, कुंठित और अंतर्मुखी बनता है । उसपर समाज और माँ का बुरा असर पड़ा है। उससे जितने भी आदमी मिले सभी आदमी स्वार्थी हैं । पिता के मरने के बाद माँ दूसरे के साथ शादी कर उसे छोड़ जाती है और उसके मित्र, पड़ोसी एक - एक कर उसका सामान ले जाते हैं । इसकारण उसे अपनी जिंदगी पराई लगती है वह शादी इसलिए नहीं करता कि, वह अपने पिता की तरह पत्नी को दूसरों के लिए छोड़ जाना नहीं चाहता । इसलिए अंतर्बाह्य परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिए वह जर्मनी जाने की तैयारी करता है । तापस सामाजिक संबंधों और वैयक्तिक स्वतंत्रता के बीच आहतहोकर संघर्ष कर रहा है । वह जिंदगी से हारा - टूटा, थका है । वह जिंदगी का सामना करने के बजाय पलायन करना चाहता है, क्योंकि उसे अपनाही भाग्य अनिश्चत - सा लगने लगता है, इसलिए " उसे अहसास होता है, ऐसे ही एक जन - शून्य व्दीप मे एक दिन वह पैदा हुआ होगा - और एक दिन उसी में मर भी जाएगा - - - ।"[27]

महानगर में आहत एक युव्क की घुटनभरी कहानी है यह ।

नि ष्क र्ष :-

1) महानगर के माहौल में आदमी के टूटे रिश्ते, तनाव, अस्तित्वहीनता, अकेलेपन और अन्तर्द्वंद्व का चित्रण है ।

2) अर्थ के कारण अस्तित्व बोध की चिंता और ठंडे बनते रिश्तों का चित्रण ।

3) जोशीजी की महानगरीय कहानियों में स्त्री - की अपेक्षा पुरुष का अंतर्द्वंद्व अधिक दिखाई देता है ।

4) महानगरीय नायक संघर्ष में भी ठंडे दिमाग से काम करता है !

5) पहाड़ से महानगर आये व्यक्तियों में आत्मीय संबंधों के प्रति आस्था दिखाई देती है ।

6) महानगरीय नायक अभावग्रस्त, अतृप्त और मानसिक बीमारी से पीड़ित है ।

****

(2) ** आर्थिक समस्याओं से संबंधित कहानियाँ **

सुव्यवस्थित अर्थतंत्र के आधार पर ही जनता का जीवन निर्भर होता है । व्यवस्था के बिगड़ ने में अर्थ ही अधिक जिम्मेदार होता है । इसलिए आर्थिक व्यवस्था ठीक ढंग से बनाना आवश्यक होता है । नहीं तो देश बुरी तरह से नष्ट होता है ।

भारत की आधुनिक अर्थ - व्यवस्था पूँजीवादी है, जो कुछ लोगों के हाथ में चली गयी है । इससे लाभ वे ही उठाते हैं, जिनके हाथों में अर्थ व्यवस्था है । इस व्यवस्था के कारण जो विषमता एवं समस्या उत्पन्न हुई है, आर्थिक समस्या है । इसी कारण सामान्य लोग महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी आदि आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे हैं ।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में आर्थिक सुधार के लिए कई योजनाएँ बनाई गयी थीं । औद्योगिकता को प्रोत्साहन मिला था । लेकिन इसमें अधिक लाभ धनवान लोगों को ही हुआ है और गरीब, गरीब ही रहे । चारों ओर महंगाई, घूसखोरी, रिश्वतखोरी बढ़ी है, जिसके हाथ में पैसों की थैली, उसके हाथ में नौकरी का आर्डर इसीकारण आम जनता रोजी - रोजी के लिए हैरान होने लगी है । मनुष्य दो रोटियों के लिए दर - दर भटकने लगा है । बेरोजगारी की समस्या बढ़ी है । पेट भरने के लिए आदमी कुछ भी करने के लिए विवश हुआ है । आज तो यह समस्या दिन - ब - दिन बढ़ती ही जा रही है, जिसका चित्र हमें जोशीजी की कहानियों में देखने को मिलता है ।

हिमांशु जोशीजी की कहानियाँ मुख्यतः निम्न मध्यवर्गीय समाज पर आधारित हैं । उनकी कहानियों के पात्र चाहे म्हानगरीय हों, चाहे पहाड़ी परन्तु उनके सामने पहाड जैसी आर्थिक समस्या खड़ी है । इनकी कहानियों में महानगरीय आर्थिक समस्या का असली चित्र दृष्टिगोचर होता है । यथार्थ के धरातल पर लिखी इनकी कहानियाँ आज की भयावह आर्थिक स्थिति का बोध कराती है, जिसका विवेचन हम एक - एक कहानी को लेकर देने जा रहे हैं।

1) अ भा व :-

" अभाव " कहानी में आर्थिक दुर्बलता से घायल हुए दो भाई यों का अंतर्द्वंद्व चित्रित है ।

प्रस्तुत कहानी का नायक सुशील पाठशाला में नौकरी और टयूशन लेकर परिवार की जिम्मेदारी निभाता है । उसके घर में बूढ़ी माँ और भाई के बच्चे हैं । गरीबीकेकारण छोटे बच्चों को दूध तक पीने के लिए नहीं मिलता । उसका बड़ा भाई दरिद्रता के कारण अपने घर और बच्चों को छोडकर गाँव - गाँव भटकता है । गरीबी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा है । वह अपने ही अंतर्द्वंद्व में बच्चों और माँ को देखने तक नहीं आता । एक बार आता है तो खाली हाथ । इसलिए अपनी ही अंतर्पीडा से मूक रहता है । जाने के लिए उसके पास पैसे तक नहीं । सुशील राशन के लिए रखे बीस रुपये उसे दे देता है । परन्तु लज्जा वश दास भैया वे पैसे माँ के हाथ में देकर चला जाता है ।

सुशील नौकरी और घर की जिम्मेदारी संभालते - संभालते उदास हो गया है । इसतरह निम्न मध्यवर्ग दरिद्रता की काली छायाओं से गुजर रहा है ।

2) **दंशित :-**

यह आर्थिक परिस्थिति में यंत्रणा सहने वाले एक दंशित की कहानी है । लड़ई में बड़े भाई की मृत्यु होने के कारण इस कहानी के नायक नीरेन पर घर की जिम्मेदारी पड़ती है । नीरेन इस दायित्व को चुपचाप निभाता है । आर्थिक चिंता के कारण कम आयु में ही उसके बाल सफेद हो गये हैं । उसे नींद न आने की बीमारी जड़ गई है । इसमें ही उसकी लगी - लगाई कच्ची नौकरी भी बरस के अंदर-ही-अंदर छूट गयी । नौकरी के लिए मारा - मारा फिरने के बाद भी नीरेन को नौकरी नहीं मिलती । दवा के लिए व्यर्थ पैसे खर्च होते है, इसलिए उसके पिताजी दवा पीना ही छोड़ देते हैं । इन सभी कारणों से उसके सारे अरमान टूट जाते हैं । फिर भी उसे गुस्सा नहीं आता । वह दूसरों के साथ अकारण लड़ना नहीं चाहता । वह अपने आप से और परिस्थिति से संघर्ष करता है ।

3) **बूंद पानी :-**

प्रस्तुत कहानी में आर्थिक दुर्बलता के कारण पहाड़ से महानगर आये भाइयों का अंतर्द्वंद्व है । विश्वेश्वर और उसकी पत्नी कालिंदी महानगरीय आर्थिक परिस्थिति से पैसे - पैसे के लिए संघर्ष करते हैं । इस परिस्थिति में विश्वेश्वर का भाई आर्थिक परिस्थिति से मजबूर होकर देहात से बच्चों के साथ रहने के लिए उसके पास आता है ।

विश्वेश्वर के भाई के आते ही कालिंदी क्रोधित होती है, क्योंकि कालिंदी रोज - रोज के मेहमानों से तंग आयी है । उसके पास पहनने के लिए फटी धोती के सिवा और कुछ नहीं। इसलिए देहात से आया विश्वेश्वर का भाई उसे संकट - सा लगता है ।

परन्तु विश्वेश्वर का भाई घर का उदास वातावरण देखकर अपना रुई का व्यवसाय शुरु कर अपना स्वावलंबत्व सिध्द करता है । यह कहानी अर्थ के कारण अपनत्व नष्ट होकर अजनबीपन के निर्माण का अहसास कराती है ।

4) जीना मरना :-

" जीना - मरना " महानगर के आर्थिक विपन्नता में फँसे मध्यमवर्गीय परिवार के संकट बोध को दिखानेवाली कहानी है । इस कहानी में यह चित्रित है कि मध्यवर्गीय लोग कड़ी मेहनतकरके पैसा इकट्ठा करते तो हैं, परन्तु उनका आर्थिक दुःख कभी समाप्त नहीं होता ।

इस कहानी के " मैं " के सामने अर्थ से उत्पन्न बरखा की शादी की समस्या, बीमार बच्चे के इलाज की चिंता और पत्नी जया के अमरिका से आनेवाली अमीर बहन और ससुरवालो के लिए अच्छे घर का इंतजाम करने की चिंता है ।

जया अपना परिवार संभालने के लिए एक - एक पैसा होशियारी से खर्चा करती है । पैसे अधिक न लग जाय इसलिए प्लॅस्टिक की चूडियाँ पहनती है, त्यौहार के अवसर पर भाई से मिले पैसे बरखा के ब्याह के लिए डाकखाने में जमा करती है, बब्बू के लिए फटे कपडों में से कपडे तैयार करती है । बड़ी मेहनत से परिवार का चक्र चलाती है ।

इस प्रकार जोशीजी इस ओर संकेत करते हैं कि मध्यवर्गीय परिवार के लोग आर्थिक संकट में भी पैसा - पैसा जुटाकर काट - छाटकर अपनी जिंदगी कैसे गुजारते हैं ।

5) सिमटा हुआ दुःख :-

प्रस्तुत कहानी में यह चित्रित है कि आर्थिक संकट मनुष्य को किस हद तक पहुँचा

देता है । इस कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार की अंतर्पीड़ा है । इस कहानी के पिता पर घर की सारी जिम्मेदारी है, जिसमें लड़कियों की शादियाँ और आर्थिक दृष्टि से परिवार को संभलने की समस्या हैं ।

पिता रिटायर होनेवाले हैं, लेकिन घर की आर्थिक स्थिति के कारण पिताजी नौकरी के लिए ऐक्सटेनसन लेना चाहते हैं । एक संस्कारशील मध्यवर्गीय पिता को मजबूरी से बॉस के हाथ अपनी बड़ी लड़की की इज्जत रिश्वत के रुप में देकर ऐक्सटेनसन लेना पड़ता है ।

इसप्रकार आर्थिक विपन्नता के कारण बाबूजी विवश होकर अपने मूल्यों को बेचते हैं ।

6) लिखे हुए शब्द :-

यह कहानी एक ऐसे महाशय की है जो गरीबी से छुटकारा पाने के लिए अपनी पत्नी को वेश्या व्यवसाय करने के लिए प्रवृत्त करता है । इस कहानी में रामायणी नामक एक व्यक्ति है । उसका रामायण पर असाधारण अधिकार होने के कारण लोग उसे रामायणी कहते हैं ।

रामायण का पाठ - पढ़ानेवाला यह आदमी अर्थ के कारण पत्नी का दलाल बनता है । उसके मुहल्ले के लोग भी इसी प्रकार के हैं । पहले इस मुहल्ले में कीर्तन वगैरह चलता था । पर अब रात के ग्यारह - बारह बजे टैक्सियों की आवाज सुनाई देती है ।

इसतरह निम्नवर्ग के लोग आर्थिक दृष्टि से नैतिकता या अनैतिकता की ओर ध्यान न दे कर नारी का इस्तेमाल करके पैसे कमाने को मजबूर हैं । जोशीजी इस ओर संकेत करते हैं कि लोग आर्थिक समस्या सुलझाने के लिए किस नीच प्रवृत्ती का सहारा ले रहे हैं । अर्थ को मूल्य मानने के कारण आज इसतरह पारंपारिक मूल्य टूटते जा रहे हैं ।

7) नाव पर बैठे हुए :-

इस कहानी में निरन्तर आर्थिक तंगी और पारिवारिक समस्याओं में उलझी " वसुधा "

की वेदना चित्रित है । वसुधा अपने घर की कमाऊ बड़ी लड़की है, जिसपर परिवार का बोझ है । परन्तु अपनी कच्ची नौकरी में घर की जिम्मेदारी संभालने में असमर्थ है । इसलिए वह हताश, उदास हो गई है । उसके सामने तो घर की रोजी - रोटीकी बड़ी समस्या खड़ी है, जिसका निर्वाह तक वह ठीक तरह से नहीं कर पायी ।

वसुधा की माँ और बहन दो रोटियों के लिए ऐसे झगड़ती है , कि दो रोटियों के लिए एक दूसरे के बाल नोचकर चप्पल फेंक देती है । और माँ क्रोध के मारे लड़की के साथ देने वाले अपने अपाहिज पति के सिर पर ठंड़ा पानी उंडेल देती है ।

आर्थिक विपन्नता से तंग आकर वसुधा की माँ और बहन अनैतिक रास्ता अपनाती हैं । मजबूरी से लोगों को अपना पेट पालने के लिए इस मार्ग से जाना पड़ता है । वसुधा मात्र इस आर्थिक संकट में नैतिकता का रास्ता नहीं छोड़ती, बल्कि अपने परिवार के लिए दर्शन से शादी करने से इन्कार करती है । इसतरह इस कहानी में आर्थिक संकट, नैतिकता और अनैतिकता का संघर्ष है ।

8) सीमा से कुछ और आगे :-

इस कहानी में महानगरीय और गाँव की दरिद्रता समान्तर रुप से चित्रित हुई है । नीरेन एक पढ़ा - लिखा पहाड़ी युवक है । उसे महानगर में आने के पश्चात् भी नौकरी नहीं मिलती और महानगर में उसे नौकरी की तलाश और आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है ।

नीरेन के पिता गाँव में भयावह दरिद्रता से झगड़ रहे हैं । उसके पिता वैद्यजी को दस - पंद्रह रुपये देने पड़ेंगे, इसी वजह से दवा - दारु नहीं लेते और पैसों की चिंता करते - करते मर जाते हैं ।

पिता के मरने के पश्चात् छब्बीस - सत्ताईस रुपये जुटाकर नीरेन घर आता है, तो उसे महानगर के साथ - साथ गाँव की दरिद्रता भी भुगतनी पड़ती है ।

यह कहानी दरिद्रता का चित्र प्रस्तुत करके मृत्यु का बोध दिलाती है । गरीबी गाँव में है, महानगर में है और देश में है । नीरेन अपना ही पेट नहीं भर सकता । वह अपनी जिम्मेदारी आर्थिक दुरवस्था के कारण संभालने में असमर्थ है, इसलिए अपने ही अंतर्द्वंद्व में अकेला बैठता है ।

इसप्रकार इस कहानी में एक पहाड़ी युवक की हताशा, निराशा और घुटन भरा दर्द चित्रित है ।

9) **आँखें :-**

अर्थ के कारण पारिवारिक मूल्य टूटते जाने का चित्र प्रस्तुत कहानी में उभरा है । बाप की मृत्यू बच्चों के लिए आर्थिक संकट का बोध दिलाती है । " आँखें " कहानी के बाबा संयुक्त परिवार के मुख्य हैं । उनका बड़ा लड़का मरने के कारण आर्थिक दृष्टि से लड़के के बच्चे अनाथ होते हैं । क्योंकि बाबा एक तो रिटायर्ड हैं और बूढ़े भी, इसलिए चाहते हुए भी बच्चों की जिम्मेदारी उठाने में असमर्थ हैं । बाकी के उनके लड़के बच्चों की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं होते । संबंध अर्थ पर निर्भर होने के कारण आपसी संबंध टूट जाते हैं । इसी मानसिक पीड़ा में बाबा की मृत्यु होती है । इसतरह कहानी स्पष्ट करती है कि सिर्फ अर्थ के कारण मानवीय संबंध और रिश्ते टूटते जा रहे हैं ।

10) **किसी एक शहर में :-**

इस कहानी में घर की आर्थिक जिम्मेदारी उठानेवाली एक युवती है, जो अपमान झेलकर नब्बे रुपये की नौकरी में परिवार को संभलती है । घर में उसकी माँ और कमेटी स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़नेवाला छोटा भाई है । नब्बे रुपये में बड़ी मुश्किल से घर को संभालती है। उसके सामने सामने " राशनवाले का बिल इस महीने कैसे चुकाएँ " का प्रश्न होता हे । इसमें महानगर के एक छोटे से घर की आर्थिक स्थिति का चित्रण है । परिवार चाहे छोटा हो या बड़ा पर आर्थिक प्रश्न तो रहेगा ही ।

आर्थिक संपन्नता के कारण ही मुहल्ले में अस्तित्व बना रहता है । इसलिए इस कहानी की नायिका अपने रिश्तेदार से कहती है, " अच्छे कपड़ों में किसी अच्छे आदमी के आने - जाने से उन्हें लगता है, हमारे भी अच्छे रिलेशन हैं । जिस दिन उन्हें लगेगा, इस पराये शहर में हम एकदम अकेले हैं - वे हमें दिन - दोपहर नोच - नोचकर खा डालेंगे ।"[28] जोशीजी इससे यही संकेत देते हैं कि आजकल " सबसे बड़ा रुपया है।" इस प्रकार अर्थ के कारण समाज में संबंध बन रहे हैं और गरीबी के कारण संबंध टूट रहे हैं ।

11) आदमियों के जंगल में :-

इस कहानी में आर्थिक परिस्थिति से जूझते एक संवेदन शून्य पहाड़ी युवक का चित्र प्रस्तुत है, जो बेकारी के कारण हतप्रभ हो गया है ।

ऋण से मुक्त होने की आशा से पढ़ा - लिखाकर पहाड़ी पिता जितेन को शहर भेज देते हैं । वे मुनीमगिरी करते - करते थक गये हैं । वे इस आस को लगाए बैठे हैं कि जितेन पैसे कमाकर कब लायेगा और हमारी आर्थिक चिंता कब मिटेगी । परंतु जितेन नौकरी न मिलने के कारण इनकी इच्छा पूरी नहीं कर सकता ।

जब उसे पता चलता है कि पैसे का संबंध ही सबसे बड़ा संबंध है, जो उनका मन विद्रोह से कराह उठता है और वह आदमियों के जंगल में पागल - सा होता है । इसतरह जोशीजी ने बेकार युवकों की व्यथा बताकर, उनकी आर्थिक दुरवस्था पर प्रकाश डाला है ।

12) फा स ला :-

" फासला " कहानी में आर्थिक परेशानियों से आहत - शोषित और भूखे युवक की अंतर्पीड़ा चित्रित है । एक पहाड़ी युवक पिता के मरने के बाद परिवार का दायित्व लेकर नौकरी की तलाश में दिल्ली आता है । यहाँ दर - दर भटकने के बाद भी उसे नौकरी नहीं मिलती । इसलिए यह युवक ट्रक के नीचे आकर अपनी एक टाँग कटवा कर एक महीने के अंदर - ही - अंदर सरकारी नौकरी हासिल करता है और अपनी आर्थिक समस्या हल करता है । यह युवक आर्थिक दुर्बलता से तंग आकर जीने-मरने का फासला सताप्त कर, भूखसे मरने के बजाय अपंग होकर जीना पसंद करता है ।

इस प्रकार आर्थिक मजबूरी के कारण वह जीकर भी मर जाता है और अंत तक इसी पीड़ा में अपनी जिंदगी गुजारता है ।

13) **झुका हुआ आकाश :-**

" झुका हुआ आकाश " कहानी में यह चित्रित किया है कि, आर्थिक अभाव के कारण छुट्टे का युनिव्हर्सिटी और यू. के. जाकर पढ़ने का सपना पूरा नहीं होता और अंततक अपनी ही अंतर्वेदना में पीड़ित रहता है । छुट्टे का मध्यवर्गीय भाई गृहस्थी के जंजाल में ओर अपने अल्पवेतन में सारे परिवार का दायित्व निभाने में असमर्थ है । इस कहानी में मध्यवर्ग की मानसिक पीड़ा है ।

14) **नयी बात :-**

इस कहानी का नायक चंद्रा वल्लभ चंद्रा वल्लभ आर्थिक परेशानियों से गुजरता एक मूक आदमी है, जो हमेशा चिंता में ही रहता है । वह हिसाब में सवा - तेरह आने का जोड़ न मिलनेकेकारण परेशान होता है । गृहस्थी का खर्चा, बहन की शादी की समस्या और गाँव के परिवार के सदस्यों को पैसे भेजने की चिंता में उसकी नींद ही उड़ जाती है । अपनी आय में वह अपनी ये सारी जिम्मेदारियाँ संभल नहीं सकता । तीन महीने से पहले " कमेटी " के लिये सत्तर रुपये भी वह भर नहीं सका । इसप्रकार अपने ही आर्थिक दुर्बलता न मिटानेवाला चंद्रा उपरेती गाँववालों की क्या मदद करेगा, बहन की शादी कैसी करेगा? इसलिए वह अपने आपसे संघर्ष करता अंत तक मौन रहता है ।

15) **त र प न :-**

आँचलिक परिवेश में लिखी " तरपन " कहानी आर्थिक असमर्थता की भयानक परिस्थिति को उजागर करती है, जिसमें गरीबी का वास्तविक एवं भयानक चित्रण है ।

इस कहानी में आर्थिक दायित्व संभालनेवाली एक नारी है, जिसका पति सड़क बनाते

AJI UNIVE

समय सुरंग उड़ने से मर जाता है । इस बेसहारा नारी के सामने तीन दिन से भूखे बच्चों को जिलाने की और पति की मृतक आत्मा को पिण्डदान करके पितरों में मिलाने की समस्या खड़ी है । ये दोनों समस्याएँ सुलझाने के लिए धन की आवश्यकता है । बेचारी को ऋण देकर सहायता करनेवाला एक पड़ोसी भी नहीं मिलता । दुकानदार के पास सामान जुटाने के लिए जाती है तो वह इज्जत लूटना चाहता है । ब्राम्हण तो भोजन न मिलने के कारण उसे कुलच्छनी कहकर चले जाते हैं ।

इसतरह एक गरीब अबला दरिद्रता से घायल होकर अपनी जिंदगी बिताती है । जोशीजीने मधुलि के माध्यम से सामान्य लोगों का दुःख उजागर किया है ।

16) " रास्ता रुक गया है । " :-

" रास्ता रुक गया है । " नंगे - भूखे मजदूरों की आँचलिक परिवेश में लिखी कहानी है; जिसमें अर्थ के काले आँखोंवालें जहरीले साँप इन गरीब मजदूरों के विकास का रास्ता रोक रहे हैं ।

आँचलिक प्रदेश गरीबी का इलाका है, यहाँ गरीबी की पीड़ा इतनी है कि लोग दाने - दाने के लिए मुहताज है । बीमार बच्चे को लेकर एक माँ घर में नहीं रह सकती, क्योंकि यदि वह काम पर नहीं जायेगी तो खायेगी क्या ? यह प्रश्न उसके सामने जहरीले नाग की तरह फन फैलाकर खड़ा होता है ।

इतना ही नहीं यहाँ अकाल - महामारी का जोर है, मजदूरी भी अधिक नहीं मिलती । ठेकेदार तो कम मजदूरी में अधिक काम करवाते हैं । इन आर्थिक परिस्थितियों में वे लोग जीने के लिए असमर्थ हैं । इस भयानक स्थिति के लिए हमारी सरकार कारण है ।

सरकार आँचलिक विकास के लिए कई योजनाएँ बनाती है, परन्तु भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की संकुचित मनोवृत्ति और भ्रष्टाचारी अधिकारियों के कारण विकास का मार्ग संकीर्ण हो जाता है। अनाड़ी गरीब लोगों को विकास की आशा दिखलाकर धोखा दिया जाता है । और अंचल की गरीबी, दरिद्रता वैसी - की - वैसी ही रहती है ।

17) **काला धुआँ :-**

" काला धुआँ " शीर्षक आँचलिक कहानी में भुखमरी तथा दरिद्रता के दर्शन होते हैं । इस कहानी में गरीबी से दंशित होनेवाली एक नारी है, जिसे गरीबी और सुंदरता एक अभिशाप साबित होते हैं । इस बेचारी का आर्थिक अभाव के कारण शारीरिक शोषण निरन्तर चलता रहाता है ।

दो रोटियाँ देने का बहाना कर गाँव के नराधम इस औरत पर अत्याचार करते हैं । धर्म की बात करनेवाले बहुत सारे लोग उसके सामने दो रोटी के टुकड़े फेंक उसके शरीर को नोच - डालते हैं । जब वह खेतों में काम करने जाती है तब फटे चीथड़ों के बीच उसके खुले अंगों को भूखी नजरों से देखकर, उसके दर्द को पूछकर सहायता करने के लिए आतुर हो जाते ।

पति ने उस पहनने के लिए चीथड़ा तक न दिया, वह दूसरों की जूठन पर अपने बच्चों का पेट पालती है । परन्तु अकाल के कारण दो बच्चे भी मर गये । इसतरह गरीबी ने उसकी जिंदगी ही बरबाद की ।

अर्थ का दंश बड़ा जहरीला होता है । जोशीजी की, महानगर में काम-करनेवाली स्त्रियाँ आर्थिक विपन्नता के कारण अपमान सहकर नौकरी करती हैं, जिसका चित्रण "भेड़ियें", " चील " और " किसी एक शहर में " कहानियों में हुआ है ।

इसप्रकार जोशीजी ने आँचलिक और महानगरीय आर्थिक विपन्नता का सजीव चित्रण किया है ।

नि ष्क र्ष :-

1) आर्थिक संकट के कारण मध्यवर्गीय जीवन मूल्यों की आहुति की ओर संकेत करते हुए नैतिकता का आग्रह ।

2) जोशीजी का नायक आर्थिक विपन्नता के विरोध में कोई संघर्ष नहीं करता ।

3) शहर और गाँव की नारी आर्थिक दुर्बलता के कारण अत्याचार सहती है ।

4) अर्थ का बोझ संभालने में असमर्थ जोशीजी के नायक और नायिकाएँ विशेषतः अविवाहित है ।

5) अर्थ के कारण जोशीजी के नायक या नायिका तनावग्रस्त, निराश, अजनबी, अपरिचित और घुटन से भरा जीवन बिताते हैं ।

6) जोशीजी के नायक आर्थिक परिस्थिति में फँसे मौन और अंतर्द्वंद्व से पीड़ित हैं ।

****

*** राजनितिक समस्याओं की कहानियाँ ***

राजनीति मूलतः एक विचार प्रणाली है । विचारों को प्रत्यक्ष में लाने के लिए जो व्यवस्था स्थिर की जाती है, उसे राजनीति कहते हैं । सामान्यतः राजनीति लोगों को अपने नियमों से, योजनाओं से सही मार्ग दिखलानेवाली एक कार्य पध्दति है । इस पध्दति को कार्यरत करने का काम राजा, नेता या अधिकारी आदि करते हैं । जनता की बागडोर अपने हाथ में लेकर लोकसेवा करना ही राजनीतिज्ञों का कर्तव्य होता है । उन्हें ईश्वर समझ जनता उनके दिखायें मार्ग पर चलती है ।

जोशीजी की कहानियों में राजनीतिक भेड़ियें, भ्रष्टाचारी मंत्री और गरीबी का मजाक उड़ानेवाले, दूसरों को धोखा देनेवाले लोकप्रतिनिधि हैं । कहीं सच्चे स्वतंत्रता सेनानी या समाजसेवी भी हैं, जो अन्याय के प्रति अहिंसात्मक रूप से विद्रोह करते हैं । इसतरह अनेक राजनीतिज्ञों की असली कथाओं पर प्रकाश डाला गया है ।

1) जलते हुए डैने :-

" जलते हुए डैने " हिमांशु जोशीजी की एक प्रसिध्द कहानी है, जिसमें राजनीति का संबंध जन - सेवा से न होकर जनान्दोलन का दमन करना, लोगों पर पुलिसी अत्याचार करके अपना अधिकार टिकाना और स्वार्थ के लिए जनता और देश को दाँवपर लगाना है ।

" जलते हुए डैने " में एक और जनतंत्रात्मक राज्य में जनता अपने हक के लिए लड़ रही हैं, तो दूसरी ओर लोक प्रतिनिधि, मंत्री, नेता, पुलिस और सरकारी अधिकारी जनता का छल कर रही हैं । एक ओर जनता सरकार के विरोध में विद्रोह कर रही हैं । तो दूसरी ओर स्वतंत्र भारत की पुलिस जनान्दोलन का दमन कर रही है । जैसे अकाल - पीड़ित गाँव के भूखे लोगों को सरकार अपना दायित्व होते हुए भी अनाज देने के स्थानपर चोर बाजारों में बिकती है । लोगों को महामारी में दवा नहीं देती, पीड़ित, भूखी जनता जुलूस निकालती है, तो उसपर गोलियाँ चलाती है । नेता उस अवसरपर आकर फोटो खिंचवाकर चला जाता है । और पुलिस जुलूसवालों को देशद्रोही ठहराते हैं । धरनावालों को घसीटते हैं, औरतों पर बलात्कार करते हैं । इस प्रकार स्वतंत्रता के पश्चात् रामराज्य आने के बजाय रावण राज्य आ गया है ।

इस कहानी में अन्याय, अत्याचार के विरुध्द संघर्षरत शिवदा का प्रतिनिधि चरित्र उद्घाटित हुआ है । कहानी का नायक शिवदा अन्याय के विरुध्द अहिंसात्मक आन्दोलन का समर्थन करके जन जागृति करने का प्रयत्न करनेवाला एक जीवंत पात्र है । शिवदा को स्वतंत्रता आन्दोलन की शिक्षा उनके पिता से विरासत में मिली है, जो गांधीवादी विचारों के थे । शिवदा मानवीयउदात्त गुणों से भरे एक सच्चे समाज सेवी हैं, जो चेचक की महामारी में, अपनी जान की परवाह न करते मरीजों की सेवा करके भयानक संहार को रोकने की कोशिश करते हैं।

शिवदा अपने गाँव में एक प्राइवेट स्कूल में अध्यापक थे उनको सरकारी शासन के खिलाफ कार्य करने के कारण सरकारी राशि पर चलनेवाली स्कूल का इस्तीफा देना पड़ता है । इसतरह वे नौकरी और निजी जीवन की बिना चिंता किए वे सेवा में लगे रहते हैं ।

अकाल, महामारी और बाढ़ में सरकार लोगों की सहायता नहीं करती । इसी कारण शिवदा सरकारी दफतरों के आगे धरना धरते हैं, अफिसरों की कारों के आगे लेटजाते हैं, बड़े - बड़े मंत्रियों और नेताओं को निवेदन देते हैं । परन्तु कुछ लाभ नहीं होता । ऊपर से सरकारी अफसर यह घोषित करते हैं कि लोग भूख के कारण नहीं पौष्टिक तत्वों की कमी के कारण मरे हैं । जब सच्चाई बतलाने का शिवदा प्रयत्न करता है तब उसे पागल ठहराया जाता है ।

सरकार सिंचाई की व्यवस्था का दायित्व न निभाने के बावजूद किसानों से जोर - जबरदस्ती लगान वसूल करना चाहती है, तब शिवदा इसे अनैतिकता समझ सरकारी कानून की अवहेलना करते हैं तो सरकार शिवदा को जेल में डालती हैं । अदालत में शिवदा अन्याय का विरोध करते हुए स्पष्ट कहते हैं कि "मैं ने जो कुछ भी कहा, सच कहा था । सच बोलने की सजा अगर मृत्युदण्ड है, तो मुझे वह भी मंजूर है ....'[29] इतना कहने पर भी सच्चाई एक जुल्म साबित होती है और अंत में उनको जेल की काल कोठरी में मरना पड़ता है ।

इसतरह जनतंत्र में राजनीतिक भेड़ियों के हाथों में जनता की बागडोर होने के कारण सामान्य मनुष्य अत्याचार सहता है, उनमें से एकाध शिवदा अन्याय के विरोध में संघर्ष करता है तो उसे मरवाया जाता है । यही आम - आदमी का अंतर्द्वंद्व है, क्योंकि चाहते हुए भी वह कुछ नहीं कर सकता । वह तो सरकार की पुलिस से ड़रकर घर के बाहर तक नहीं आता ।

इस प्रकार जोशीजी ने आम - आदमी का दुःख व्यक्त करते हुए भ्रष्ट राजनीति का सच्चा रूप पाठकों के सामने रखने का प्रामाणिक प्रयत्न किया है ।

2. **एक वट वृक्ष था :-**

'एक वटवृक्ष था' भारत की राजनीति का जीवंत चित्र है, जिसमें यह चित्रित किया गया है कि सत्ता के लालच में नेता चुनाव कैसे लड़ते हैं और जीतने के बाद जनता को धोखा देकर कैसे महापुरुष बनते हैं । 'एक वटवृक्ष था' एक प्रतीकात्मक कहानी है, जो एक राजनीतिक व्यंग्य बनकर पाठकों के सामने आती है ।

इस कहानी में यह अंकित किया गया है कि स्वतंत्रता के बाद गाँवों में नवोन्मेष के साथ पटवारी, पेशकार, बी.डी.ओ. भी आये, वैसे ही दुकानों में राशन मिलना बंद हो गया, चोर बाजारी से अनाज खरीदने के लिए लोगों के पास पैसे नहीं थे, सरकार अपनी ओर से सहायता करने के बदले ही भुखमरी को छुत की बीमारी घोषित कर रही थी और नेतालोग सोच - समझकर चुनाव में लोगों को झूठा आश्वासन देकर चुनाव जीत रहे थे ।

'एक वट वृक्ष था' कहानी में लोगों को टोपी पहनानेवाला एक ब्राम्हण पुत्र है, जिसके सिरपर उसका बूढ़ा बाप टोपी रख देता है और वह महापुरुष विश्व नेता, जीवंत देवता और परमेश्वर बन जाता है । बिना वटवृक्ष के नीचे बैठे ब्राम्हण - पुत्र को ज्ञान प्राप्त हो जाता है । इसी ज्ञान के कारण वह पूर्ण रूप से बदल जाता है, जो भी बुरा काम करता है, उससे लज्जा का अनुभव नहीं करता । झूठ बोलते समय उसका चेहरा तक काला नहीं पड़ता । उसके ही सम्प्रदाय के शहरों के लोगों के निकट वह पहुँचता है, । 'जिनके पास जितने टोपीवाले अधिक उतना वह आदमी बड़ा' इस ओर ब्राम्हण पुत्र की दृष्टि जाती है और वह चुनाव के लिए खड़ा हो जाता है । परन्तु चुनाव का तरीका न मालूम होने के कारण पहले चुनाव में वह हार जाता है । इसके पश्चात वह महास्थवीर के पास जाता है । महास्थवीर उसे सरकारी अस्पताल में जाकर 'भेजा' एवं 'कलेजा' निकालने की सलाह देता है । इस सलाह को अपनाने के बाद उसे चुनाव में जीत मिलती है ।

जीतने के पूर्व ब्राम्हण पुत्र ने जो आश्वासन जनता को दिये थे उनकी पूर्ति वह बाद में

BARR. ... LIBRARY

नहीं करता । जनता की शिकायतें अनसुनी करके उनकी माँगों का वह हँसी उड़ाता है और अंत में कमिशन बिठलाने को फिर एक बार आश्वासन देता है । जब विरोधी दल-नेता भारत बंद की धमकी देता है तो चालाक नेता बेकरीवालों को बुलाकर ब्रेड़ बनाना ही बंद करवाता है, क्योंकि देश की सारी परेशानियों की जड़ भूख ही तो है । ऐसा नेता होने पर भी उसके आस - पास के लोग इसका ही समर्थन करते हैं, जिसकी वजह से उसे 'सीना - फुलाने' की बीमारी हो जाती है । अन्त में इसी बीमारी से उसकी मृत्यु हो जाती है और महापुरुषों के चित्र की बगल में इसका एक चित्र लटक दिया जाता है ।

जोशीजी इस कहानी के माध्यम से इस ओर संकेत करते हैं आज की राजनीति में स्वैराचार ही एक आदर्श बन गया है, और स्वार्थ लोलुप नेता राजनीति का विपरीत अर्थ ग्रहण कर रहे हैं, जिससे स्वैराचार बढ़ रहा है, आम-आदमी दुःख भुगत रहा है और देश की हानि हो रही है ।

3. 'आदमी जमाने का'

'आदमी जमाने का' एक ग्राम की राजनीति का दर्शन करानेवाली कहानी हैं । ग्रामों में गांधीवाद का झूठा समर्थन करनेवाला एक मुखिया इस कहानी का नायक है, जो अपने स्वार्थ के लिए पंचवर्षीय योजना का लाभ उठाता है । इससे ग्रामों के प्रगति के बदले हानि ही होती है ।

इस कहानी का सूत्रधार घुग्घू बाबू एक स्वार्थी, ग्रामसेवा के नाम पर ग्राण्ट मंजूर करनेवाला एक झूठा जनसेवी है । वह अपने चेहरेपर नकली रंग चढ़ाकर सरकार और ग्रामवासियों से चंदा और श्रमदान लेता है । वह अपने स्वार्थ को अपराध नहीं मानता, क्योंकि उसका कहना है 'मैंने देश के लिए कितना कुछ नहीं किया ! फिर 'पंचायत -घर' में मैंने सिर टिका लिया तो कौन - सा अपराध किया । पंचायती भैंस का दो बूंद दूध कभी - कदास मेरे बच्चों के गले भी उतर गया तो कौन - सा अपराध हुआ ! लोगों ने चांदी कर ली । घर भर लिये । मैंने दो जून खाने का सामान जुटा लिया तो कौन - सा अपराध कर डाला ।[30] इसी उद्देश्य से वह सरकार की राशि खुद हासिल कर पंच - वर्षीय योजना की कागजी घोड़ - दौड़ चालू करता है ।

जब डिप्टी कमिश्नर इन्स्पेक्शन के लिए आता हे, तो घुग्घू बाबू उसका लाभ उठाकर अपने किये काम पर पर्दा डालता है । घुग्घू बाबू उनको बनावटी पौधे असली कहकर, बिना पानी की नौ डिग्गियों में कृत्रिम पानी भरे दिखाता है, जिसे कमिश्नर रात के समय देखकर खुश होता है । गांधी - पंचायत में बच्चों को दूध बाँटते देखकर घुग्घू बाबू जो गांधी पंचायत - घर का उपयोग अपनी भैंस बाँधने के लिए करता हैं, उसे ही "जमाने का आदमी" किताब प्राप्त होता है और डिप्टी बाबू उसका अनुकरण करने को लोगों से कहता है । जाते जाते नकद सौ रुपये उसे इनाम देकर उसके बेटे को नौकरी दिलाने का आश्वासन भी देता है ।

इस कहानी में संकेत किया है कि सरकारी अधिकारी किसप्रकार जाँच करके ग्राण्ट मंजूर करते हैं और गाँव का मुखियाँ पढ़े - लिखे सरकारी अधिकारियों को कैसे ठगता है ।

जोशीजी की देखी हुई यह एक घटना है, जिससे उनके मन को बड़ा दुःख हुआ था । इससे छुटकारा पाने के लिए उन्होने लेखन के माध्यम का सहारा लिया और 'आदमी जमाने का' कहानी लिखकर संताप से छुटकारा पा लिया । इस प्रकार जोशीजी ने यह कहानी लिखकर खोखली योजनाओं पर प्रकाश डाल, अपना आक्रोश प्रकट किया है ।

4) **" समुद्र और सूर्य के बीच "**

"समुद्र और सूर्य के बीच " राजनीतिक भ्रष्टाचार की गवाही देनेवाली कहानी है, जिसमें समुद्र और सूर्य के बीच का दबा हुआ जीवन खड़ा है । जोशीजी ने "समुद्र और सूर्य के बीच" कहानी में भ्रष्ट नेता या मंत्री को सजा मिलने की कल्पना की है, जो सच नहीं पर सपना जरुर है, वह भ्रष्ट मंत्री को बार - बार आता है, इसकी गवाही वे खुद ही देते है, जो यथार्थ के बहुत समीप है ।

इस कहानी में लोक प्रतिनिधि के किये कर्तृत्व का चित्र ही उसके सपनों के व्दारा स्पष्ट हुआ है । सपनों में वह आत्मारूपी न्यायलय में खड़ा गवाही देता है । पहले सपनेमें सरकार उलटकर भ्रष्टमंत्री के हाथों में बेड़ियाँ डालकर मृत्युदंड घोषित करके भरे बाजार से जुलूस निकालते है, जिसमें वह खादी के सफेद रुमाल से आपना मुँह छिपाने की कोशिश करता है । स्वतंत्रता के पूर्व गांधीजी के मार्गपर चलनेवाला वह एक स्वतंत्रता सेनानी है, जो स्वतंत्रता के पश्चात एक भ्रष्टराजनीतिज्ञ के रूप में जनता के सामने

आता है । कुछ दिनों बाद उसने दूसरा सपना देखा, वह सैनिक न्यायालय के सामने खड़ा, अपनी पहली गवाही में भ्रष्टाचार से पैसे इकट्ठा कर देशद्रोह का बड़ा गुनाह कबूल करता है । दूसरी गवाही में, नदी के बाँध में सिमेंट के बदले रेत डालकर चार लाख रुपये की बचत करता है, जो बाँध पहली ही बरसात में टूटकर अनेक लोग बह जाते हैं, यह गुनाह कबूल करता है । तीसरी गवाही में अनाज की कीमतें बढ़ाकर एक रात में पैंतालिस लाख रुपया इकट्ठा करने का गुनाह कबूल करता है । चौथी गवाही में इनकी प्रांतीयता और जातीयता की व्यवस्था के कारण - राजस्थान और बिहार के अकालग्रस्त एवं बीमारी से पीड़ित लोग और बच्चे मर जाते हैं । देश को दरिद्री बनानेवाले इस भ्रष्टाचारी को सभी ओर दारिद्रय से पीड़ित माता - पिता दिखाई देते हैं ।

अन्त के तीसरे सपने में वह आत्मा के न्यायालय में आत्मा का फैसला सुनने के लिए खड़ा हो जाता है । आत्मा उसके चालीस साल के राजनीतिक जीवन में सेवा के नामपर तीन करोड़ रुपये हासिल करने, जातीयता और प्रांतीयता बढाने, विभाजन का समर्थन करने, अराजकता का दायित्व निभाने के कारण, उसके चेहरेपर कालिख लगाकर जुलूस निकाल कर भरे बाजार में फाँसी देने की सजा फर्माती है । परन्तु सजा पूरी सुनने से पहले ही वह मंत्री पश्चाताप से दग्ध होकर देहत्याग करता है ।

5) **" कोई एक मसीहा "** :-

राजनीति में भ्रष्टाचार किस प्रकार फैला हुआ है, इसका जीवंत उदाहरण " कोई एक मसीहा " कहानी है । सरकार का आद्य कर्तव्य होता है कमजोर लोगों की सहायता करना । सरकार इनकी सहायता के लिए योजनाएँ भी बनाती है, लेकिन इन योजनाओं का लाभ उनको नहीं मिलता, बल्कि राजनीतिज्ञ ही इसका लाभ उठाते हैं और कमजोर लोगों का शोषण करते हैं । इसमें स्त्री - पुरुष दोनों शामिल हैं ।

प्रस्तुत कहानी में सावित्री नाम की एक युवती है, जिसे महिलाश्रम ने पनाह दी है । लेकिन वहाँ भी सुरेश भाई जैसे लोकप्रतिनिधि अपनी कामवासना तृप्त करने के लिए आते हैं । इतना ही नहीं गांधीजी और विनोबा जैसी हस्तियों के विचार से जीवन का मार्ग चलना चाहिए यह कहते हुए स्वयं एक असहाय लड़की के शील को भ्रष्ट करता है ।

महिलाश्रम की व्यवस्थापिका अपने आश्रम की लड़कियों के साथ - साथ स्वयं अपनी लड़की को सुरेश भाई को समर्पित करती है । इसी शिफारिश के कारण आश्रम को ग्राण्ट मिलती है । स्त्री अपनेपर हुए अत्याचार का जिक्र नहीं करना चाहती । इससे उसे और भी अत्याचारोंका सामना करना पड़ता है । साविठी जिस अत्याचार से बचने के लिए महिलाश्रम में आती है, यहाँ भी उसे उसी अत्याचार से गुजरना पड़ता है । सामाजिक संरचना में नारी अधिक दुर्बल दिखाई देती हैं । गलती से उसकी कोई भूल हो तो समाज उसका नाजायज लाभ उठाता है और ऐसी जंजीरें उसके पैरो में डाल देता है कि उसे वह तोड़ नहीं सकती ।

इस कहानी में हिमांशुजी ने महिलाश्रमों में भ्रष्टाचार करनेवाले सभी स्तरों के आदमियों पर व्यंग किया है । स्वतंत्रता के पश्चात् पग - पग पर भ्रष्ट व्यवस्था दिखाई देती है, इसका लाभ अधिक राजनीतिक लोग उठाते हैं ।

इस काहनी के बारे में पुष्पपाल सिंह का कथन है - " जनसेवा की आड़ में राजनेता किसप्रकार गुलछर्रे उड़ाते हैं इसका चित्रण हिमांशु जोशी की " कोई एक मसीहा " में सशक्त रूप से हुआ है । यह कहानी समाज के छद्मवेशी मसीहाओं, राजनेताओं की नकली खाल को उतारकर रख देती है । "3।

हिमांशु जोशी आम-आदमी को सुख दुःख से जुड़े हुए लेखक हैं । इसीकारण इनकी कहानियों में सुरेशभाई जैसे सेवाव्यवसायी नेता भी आते हैं, जिन्हें खादी के धवल वस्त्रों के रूप में स्वराज्य का उपभोग लेने का लाइसेंस सरकार की ओर से मिला है । इससे नारी आश्रमों के व्यवस्थापक महिला केन्द्र को कामोपभोग का केन्द्र बनाकर भाईजी की आरती उतारते हैं । इन सब का चित्रण भ्रष्ट समाजसेवियों का असली और नकली चेहरा दिखाने में जोशीजी सफल हुए हैं ।

6) **जो घटित हुआ :-**

जोशीजी ने " जो घटित हुआ " कहानी में आज के भारत की भ्रष्ट राजनीति को प्रस्तुत किया है, जिसमें समकालीन जीवन की विसंगतियों का विपरीत अर्थ उजागर हुआ है । इसमें

भारतीय राजनीतिक लफ्फाजी को नग्न करने के उद्देश्य से इतिहास के तथ्यों का विपरीत स्पष्टीकरण किया है ।

लेखक ने इस कहानी के नौ अध्यायों में यह चित्रित किया है कि हमारे देश में राजनीति के नामपर क्या चलता है ? " जो घटित हुआ " कहानी में निवेदक पहले अध्याय में संकटमय स्थिति को संकेत के व्दारा उजागर करता है जैसे देह पर जगह - जगह नीले निशान पड़ गए हैं, घावों पर से अब तक निरन्तर लहू बह रहा हैं । पावों के पास क्रुध्द घायल नाग जमीन पर फन पटक - पटककर फुंफकारता हुआ रेंग रहा है, जो सांझ ढलने से पहले, प्रायः प्रति दिन एक बार अवश्य डसता है - - - "[32]

दूसरे अध्याय में सरकार राशन के बदले पत्थर बेचने लगी हैं, क्योंकि पत्थर में पूरे पोषक तत्व होते हैं । इसलिए काला बाजार में पत्थर की कमी महसूस होने लगी हैं ।

तीसरे अध्याय में, मकानों में मकान रह रहे हैं, सड़को पर सड़कें चल रही हैं, नदियाँ स्वयं अपना जल पी कर सूख रही हैं, बच्चों ने स्कूल की इमारत फूँक डाली, अध्यापकों को ईसा बना दिया गया है, सारे भारत का नकाशा ही बदल दिया है, अर्थात् सारे भारत को हिन्दी महासागर में डुबो दिया है ।

चौथे अध्यायमें पहाड़ जैसा अस्थिपंजर सीमा की सुरक्षा में खड़ा है, नपुसंक झंडे लिए खड़े हैं और सेनाएँ बहादुरी से पीछे हट रही हैं ।

पाँचवे अध्याय में स्वतंत्र भारत के राजनीतिक नेताओं के व्यवहार पर कड़ा प्रहार किया है । सन 1947 ई. में भूखे भेड़ियों ने आठ लाख भेड़ें को कत्ल कर अपनी माँ की जीवित लाश को दो टुकडों में विभाजित किया है ।

छठे अध्याय में मनुष्यत्व की नस्ल निंकालने के लिए मनुष्यों को जेल भेज रहे हैं । घूस न लेना, गद्दारी न करना, जातीयता और प्रांतीयता पर आस्था न रखना, देशसेवा, देशभक्ति, देशप्रेम का प्रचार करना आदि के अपराध में उन्हें सजा दी गई है ।

सातवें अध्याय में स्वतंत्रभारत की काल - कोठरी में गोलियाँ चल रही हैं, डेन्मार्क के बच्चें हिन्दुस्तान के गरीब बच्चों के दूध के लिए अपने जेब - खर्च के पैसे भेज रहे हैं ।

आठवे अध्याय में भारत के बुध्द और गांधी को बेच रहे हैं । आम आदमी खुद अपना मांस खा रहा है । वह पानी के बदले दूध - मुहे बच्चों का खून पी रहा है । कफन पहनने के बाद भी वह नंगा है ।

नैवें अध्याय में, तीस जनवरी सन् 1948 ई. में गांधीजी ने गोड़से की हत्या की, भारत ने दो सौ साल इंग्लंड पर राज्य किया । पहले दूसरे महायुध्दो में जीत हिटलर की हुई । जापान ने परमाणु बम बनवाया और प्रयोग लंडन और वाशिंग्टन पर किया । दूसरी बार 15 अगस्त सन् 1947 को भारत गुलाम बना । जाते - जाते धूर्त गारों ने अपनी बिरादारी के कालों के हाथ में इस देश की सत्ता सदा के लिए सौंप दी ।

व्यंग्य एवं फंतासी के प्रयोग से जोशीजीने भारत के पट पर सर्वत्र फैले भ्रष्टाचार स्वार्थ और टुच्चेपन को चित्रित किया है ।

7) " त प स्या " :-

" तपस्या " कहानी में स्वतंत्रता के बाद बदली हुई राजनीति के प्रति एक स्वतंत्रता सेनानी की व्यथा चित्रित हुई है । इस कहानी के नायक रथीनबाबू आजादी के लिए निष्काम मन से देश सेवा करनेवाले एक तपस्वी हैं, जिनके रोम - रोम में त्याग भरा हुआ है । इसलिए वे मातृभूमि की सेवा के बदले में मिली हुई कौनसी भी सहूलियत लेना पसंद नहीं करतें ।

" तपस्या " कहानी में भारत के स्वतंत्रता के लिए लड़े हुए दो स्वतंत्रता - सेनानियों का चरित्र उद्घाटित हुआ है । एक स्वतंत्रता के बाद भी अपना सत्व एवं राष्ट्रप्रेम नहीं छोडता, दूसरा स्वतंत्रता मिलते ही अपनी नीति बदलकर स्वार्थी बनकर अपने परिवार का हित

सोचता है । एक में त्याग की भावना है, तो दूसरे में स्वार्थलोलुपता । स्वतंत्रता के बाद न बदलनेवाले सच्चे स्वतंत्रता - सेनानी रथीनबाबू है और स्वतंत्रता के बाद बदलनेवाले दिवाकर भाई हैं, जो रथीन बाबू से कहते हैं - " अब अपना देश स्वतंत्र हो गया, कुछ लायसेंस - वायसेंस ले लीजिए । बच्चों को हम कहीं अच्छी जगह लगवा देते हैं, बुढापा आराम से कट जाएगा । अधिक आदर्शवादी न बनिए रथीनबाबू, कहीं ऐसा न हो कि फिर कभी पछताना पड़ेगा ।"[33] यह सुनते ही रथीन बाबू को बहुत दुःख हुआ ।

रथीनबाबू एक सच्चे देशप्रेमी थे, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक संघर्ष करके अपना योगदान दिया था । इनको कालेपानी की सजा भी भुगतनी पड़ी थी, जिससे उनके पिता - चल बसे थे, बूढी माँने रो रोकर आँखें गवाँ दी थीं, अँग्रेजों ने जमीन जायदाद निलाम कर दी थी । फिर भी न ड़रते रथीनबाबू संघर्षरत रहे थे ।

स्वतंत्रता के बाद पूरे होने योग्य कई सपने थे रथीन बाबू के । इसमें प्रमुख था लोगों को अपनी रोजी रोटी कमाने को मिले और सुख से जीवन बिताने को मिले, जो आजादी के बाद स्वार्थी लोगों के कारण पूरा नहीं हो सका । उनकी छोटी - छोटी जरूरतें भी पूरी नहीं हो सकीं । आजादी मिलने के बाद रथीन बाबू ने पेन्शन नहीं ली, अपने परिवार के लिए कभी सरकार के सामने हाथ फैलाकर याचना नहीं की । इसलिए दिवाकर भाई की बातें सुनते ही इनका ह्दय घायल होता है । इनके कानों पर शहीदों की चीखने की आवाज आने लगती हैं " वह हिन्दुस्थान कहा है, जिसके लिए हमने कुर्बानियाँ दी थीं - - - ? "[34]

रथीन बाबू देखते हैं स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्ष करनेवाले चंद्रशेखर जैसे लोग राशन की दुकानपर, कतार में खडे हैं । इनके सपने में भगतसिंह आकर अंग्रेजी कृतिवाले सत्ताधिशों के साथ लड़ने के लिए कह रहे हैं । अपनी पत्नी यशवंती को कुछ न देने का दुःख उनको हो रहा है । वे अपने ही अन्तर्द्वंद्व में सोचने लगते हैं, उनको स्वाधीनता के पूर्व की स्थिति और बाद की स्थिति में कोई फर्क नजर नहीं आता । उनको लगता है आजादी की जंग का क्या मतलब ? हमें सिर्फ आजादी नहीं चाहिए थी । उसके साथ - साथ मानवीयता की रक्षा भी चाहिए थी । इसकी कमी को महसूस करने पर रथीन बाबू फिर से इसका संघर्ष करने का

प्रयास करते हैं । इससे उनकी तपस्या फिर से आगे शुरू होती है । यह तपस्या शुरु होने से पहले ही उनका देहान्त होता है और उनकी तपस्या अधुरी रह जाती हैं । लेकिन तपस्या कभी खत्म नहीं होती । इसी तपस्या को दुबारा शुरू करने के लिए किसी अच्छे नेतृत्व की आवश्यकता है ।

8) " एक सुकरात और "

स्वाधीनता के पश्चात् भारत में नैतिक तत्वों का ह्रस या पतन हुआ । राजनीति के साथ - साथ लोकनीति भी बदली और सत्य, मृत्यु, राष्ट्र, समाज, भूख, धन, धर्म और मनुष्य सेवा के तात्पर्य भी बदल गये और लोग इन तत्वों का विपरीत अर्थ ग्रहण करने लगे । इन परिस्थितियों में भी एकाध सुकरात इन तत्वों की सही परिभाषा बताने की कोशिश करता है, तो इसे लोग पागल करार देते हैं । परन्तु एकाध सुकरात जन - समूह की यातनाओं से न डरकर अपने तत्वों का समर्थन करता ही रहता है, तब वह अकेला पड़ता है । उसे इसी बात का दु:ख है कि अब लोगों के चेहरे, चेहरे ही नहीं रहे, सब आकृति - विहीन, आकृती-विहीन समाज और आकृति - विहीन संस्कृति है । इसी सुकरात के अकेलेपन की अन्तर्पीड़ा " एक सुकरात और " कहानी में चित्रित है ।

इस कहानी का सुकरात पूर्वी भारत में एक छोटे से गांव के गरीब परिवार में पैदा हुआ था । इसने अपना जीवन कठोर गरीबी में बिताया था । इसलिए उसे अभाव का अहसास था । इस अभाव में भी उसने जीवन के अच्छे तत्वों का अध्ययन किया था; उन तत्वों को लोगों तक पहुँचाने का उसका उद्देश्य था । इसीकारण वह चौराहे पर खड़ा होकर कई सवाल लोगों से पूछता है और जवाब भी खुद ही देता है । जैसे -

1) सत्य किसे कहते हैं ?
2) मृत्यु क्या है ?
3) समाज किसे कहते हैं ?
4) राष्ट्र किसे कहते हैं ?
5) धर्म किसे कहते हैं ?
6) धन क्या हैं ?
7) मनुष्य की सेवा का तात्पर्य क्या होता है ?

सुकरात इन प्रश्नों के उत्तर देता है - यह सत्य है कि सूर्य दिन का नहीं रात का प्रतीक हैं । मरना मृत्यु नहीं । निष्क्रिय रहना मृत्यु है । आदमियों की भीड समाज नहीं कहलाती । बहुत से प्रांतों को नक्शे में एक साथ जोड़ देने से राष्ट्र नहीं बनता । धर्म का संबंध मंदिर - मस्जिदों से है या मनुष्य की सेवा से ? धन संपत्तिवाला गरीब होता है या धन संपत्ति विहीन आदमी ? "[35]

सुकरात के से प्रश्नों के उत्तर सामान्य लोगों की समझ के बाहर हैं, इसलिए सुकरात की उपेक्षा होती है । सुकरात जब ऐसे प्रश्न उजागर करता है तो लोग उसे देशद्रोही, समाजद्रोही और धर्मद्रोही घोषित करते हैं । परन्तु सुकरात देश और समाज की भलाई की चिंता करते - करते अंत में मर जाता है ।

सुकरात एक बुध्दिवादी तत्ववेता का प्रतीक है । वह अन्ततक पागल की तरह इन तत्वों के पीछे भागता है । परन्तु आज न सुकरात रहा, न उसके तत्व सही अर्थो में रहे । इसलिए सुकरात की मृत्यु प्रतीकात्मक रूप में लेखक प्रस्तुत करते हैं । जिस सत्य और धर्म का संबंध भारतीय जन - जीवन में नहीं रहा है, उस संबंध - की परिभाषा कहनेवाले सुकरात का शव भीड से काफी दूर पहुँचाया जाता है । सुकरात की मृत्यु सुकरात के तत्वों की मृत्यु है, सत्य और धर्म की मृत्यु है, प्रकाश याने सूर्य की मृत्यु है, राष्ट्र - समाज की मृत्यु है ।

9) " त ला श " :-

इस कहानी में राजकीय व्यवस्था की तलाश हुई है, जिसमें लापता आदमी के माध्यम से संसद - भवन और कानूनी व्यवस्था के रहस्यात्मक भेद को, उद्‌घाटित किया है । इस कहानी का लापता आदमी राजकीय - क्षेत्र की अंदर की बातें एक - एक करके बताता है ।

" तलाश " कहानी का लापता आदमी निवेदक से कहता है कि मैं लोगों को मारने के लिए पानी में जहर मिला रहा हूँ । इससे चिंतित होकर " मैं " अपने वकिल मित्र के पास जाता है, जो वर्षों से सरकारी ऑफिस में बड़े ओहदे पर है । वह सलाह देता है कि यदि तेरे पास सबूत नहीं है तो तू पुलिस स्टेशन न जाकर पंप का पानी पीकर चुप बैठो, क्यों कि

वहाँ तुझे ही अपराधी समझकर फाँसीपर लटका देंगे । एक तो वहाँ निरपराधी को जिंदगी भर चक्की पीसनी पड़ती है या फाँसी हो जाती है ।

फिर भी " मैं " पुलिस स्टेशन जाता है तो उसे कहा जाता है कि उस आदमी को कब की फाँसी हुई है । परन्तु लापता आदमी उसे फिर आकर कहता है कि पुलिस के हाथों अपराधी को पकड़ना अब ऐतिहासिक घटना हो गई है । पुलिस और कानूनी सहायता लेकर ही गुंडा, समाजद्रोही अपना काम करवाता है, इसलिए पुलिसों से न डरकर वह कहता है कि मैं कितनी बार फाँसी पर चढ़ा और जीवित हुआ, क्योंकि पुलिसों ने अपने बदले किसी दूसरे आदमी को फाँसी दी है क्योंकि हमें संरक्षण देनेवाले राजनीतिक नेता है ।

इस प्रकार पुलिस और कानूनी व्यवस्था हैं ! कायर जनता इसका विरोध नहीं करती इसलिए लापता आदमी इन लोगों को नारकीय यातनाओं से मुक्ति दिलाना चाहता है । इन नपुसंकों को मारना भी वह अमानवीयता मानता है । नहीं तो इस कानूनी व्यवस्था को जिम्मेदार राजनीतिक व्यवस्था है, क्योंकि गुंडों को सहायता देकर निरपराधी को फाँसी पर चढ़वानेवाले नेता लोग ही हैं । संसद सदस्य भी अपना प्रतिनिधित्व ठीक या सच्चाई से नहीं करते । यह व्यवस्था का खिलवाड़ ऐसा ही चल रहा है, इसे जिम्मेदार गोल इमारत है जिसमें सबसे बड़ा षडयंत्र रचाया जाता है । याने संसद भवन ही षडयंत्र का एक अड़डा है ।

ऐसी दुनिया में संवेदनशील मनुष्य जीवित ही नहीं रह सकता । जैसे महात्मा गांधी की हत्या नहीं हुई, उन्होंने जानबूझकर, आत्महत्या की थी । क्राइस्ट अपना सलीब खुद लेकर गया था । सुकरात ने जहर का प्याला स्वेच्छा से पीया था । तालस्ताय बर्फीली रात में मरने के लिए गया था । ये बड़े व्यक्ति खुद नहीं मरे थे बल्कि इनको मरवाया गया था । इन सभी का कारण है भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था ।

इसप्रकार " तलाश " कहानी में पुलिस, कानून और राजनीतिक नेताओं के काले कारनामों पर प्रकाश डालते हुए यह चित्रित किया गया है कि संसद भवन षड़यंत्र का एक बड़ा अड़डा है । उसके अधिकार पर चलनेवाली कानूनी व्यवस्था एक भ्रष्ट सरकारी संगठन है, जो

निरपराध लोगों की रक्षा करने के बजाय उन्हें फाँसी पर चढ़ाती है । इसतरह आज की सारी राज्य व्यवस्था ही खोखली और भ्रष्ट हो गई है, जिसके कारण सामान्य जनता अपनी जिंदगी सुरक्षा से नहीं बिता रही है ।

10) " हरे सूरज का देश " :-

आँचलिक परिवेश में लिखी इस कहानी में यह चित्रित किया है कि स्वतंत्रता के पश्चात् बदले हुए पहाड़ी गाँव में काला - बाजारी, तस्करी, रिश्वत और नैतिकता का विकास कैसे हो रहा है ?

इस कहानी में स्वतंत्रता के पश्चात बदला हुआ गाँव गांववालो की काली करतूते और गरीबी, दरिद्रता का चित्र दिखाई देता है । अब पहाड़ों में सत्संग की जगह जुआरियों की टोली जमती है, लाठियों के बिना एक दिन भी नहीं चलता, प्रतिष्ठित नेता तस्करी का माल बेचते हैं, और बड़े बड़े सरकारी अधिकारी उनकी सहायता करते हैं । काला बाजारी के व्यवसाय में अधिकारी, लोकप्रतिनिधि सम्मिलित हैं, अकाल - पीड़ित लोगों को देने के लिए लाये राशन का चावल चीन पहुँचाया जा रहा है, जिसमें ठेकेदार, बनिए शामिल हैं, जहाँ तम्बाकू पीना पाप समझा जाता था वहाँ लोग कच्ची शराब पी रहे हैं, लोग दाने - दाने के लिए तरस रहे हैं, इतनी गरीबी है, पटवारी निरपराध के हाथों पर हथकड़ी पहनाकर मनमानी रकम वसूल कर रहा है, डिप्टी कलेक्टर रिश्वत लेकर मुकदमों के फैसले बदल रहा है, रेल कर्मचारी ट्रेन बीच में रोककर पहाड़ी युवतियों के साथ मजाक करते हैं, देश भक्त तस्करी कर रहे हैं ।

इस कहानी में जोशीजी ने नैतिकता का पतन, तस्करी, सरकारी अधिकारों का दुरुपयोग, नेतागिरी आदि का असली रूप प्रदर्शित किया है ।

11) अपने ही कस्बे में :-

" अपने ही कस्बे में " यह चित्रित किया है कि स्वतंत्रता के बाद कस्बों का विकास होने के लिए योजनाएँ बनीं और गाँव का रूप ही कैसे परिवर्तित हुआ है । कस्बे में जैसे - जैसे सरकारी अधिकारी, पटवारी, बी. डी. ओ. आने लगे वैसे - वैसे गाँव का रूप बदल

गया और अनैतिकता अधिक बढ़ी । सरकारी कामों के नाम पर लोगों का इस्तेमाल होने लगा, जैसे बी. डी. ओ. पटवारी एवं इन्स्पेक्टर की खिदमत में ग्रामसेविका लगने लगी । जो ग्रामसेविका उनकी अच्छी खिदमत करती है उसकी तरक्की की जाती थी । बी.डी.ओ. खिदमत से खुश होकर गाँव में शराब की पिपियाँ खुलवाने के लिए इजाजत दे देता है । फैमिली प्लानिंग का इन्स्पेक्टर औरतों को तल्लीनता से देखता है । और कन्या पाठशाला में जाकर मुफ्त में " कुछ " बाँटता है । कस्बे के स्कूल में पढ़नेवाली लडकियाँ अब सब कुछ जानती है । मिलिटरी वाले लड़कियों की रक्षा करने के बजाय उन्हें ट्रकों से जंगलमें ले जाते हैं । विधवा ग्राम सेविका अपना काम छोडकर बी. डी. ओ. की खिदमत करती है ।

इसप्रकार योजनाओंका लाभ कस्बे के लोगों को होने के बजाय सरकारी लोगों को ही अधिक होता है और योजनाओं के नाम पर अनैतिकता मात्र अधिक बढ़ रही है । इतना ही नहीं मुकदमेवाले कचहरी की ओर ऐसे जा रहे हैं जैसे कि कोई शवयात्रा में सम्मिलित हो रहे हैं ।

जोशीजी ने कस्बों में दरिद्रता, गरीबी, राशन के दो - दो शेर अनाज के लिए बीस - बीस मील दूर से आकर कतार में खड़े लोग भुखमरी के कारण घर के बर्तन और जानवर बिकनेवाले लोगों का चित्र भी प्रस्तुत किया है । कस्बे में एक ओर सरकारी व्यवस्था का बुरा उपयोग हो रहा है और दूसरी ओर लोग भूख से मर रहे हैं । इसप्रकार जोशीजीने कस्बे के विकास पर प्रकाश डाला है और सरकारी लोगों का भ्रष्टाचार उजागर किया है ।

12) **" रास्ता रुक गया है " :-**

आँचलिक विकास की खोखली योजनाओं पर प्रकाश डालनेवाली " रास्ता रुक गया है " एक आँचलिक कहानी है । आर्थिक विपन्नता और भ्रष्टाचार ये दो कारण आँचल के विकास में बाढ़ के पानी की तरह रुकावट बनकर खड़े हैं, जिससे पूरा रास्ता बन नहीं पाता ।

इस कहानी का निवेदक एक इंजीनिअर है । वह सच्चा देश - सेवी है, जो आँचल का विकास चाहता है । जोशीजी ने उसे एक लोक - प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया है । वह पहाड़ी लोगों को जगाना चाहता है, उनको सुधरना चाहता है पर अनपढ़ अज्ञानी होने के

कारण वे जाग नहीं सकते, क्योंकि उनकी नींद्र कच्ची है और सभ्यता रूपी मनुष्य का जहरीला साँप उन्हें डस जाता है जिससे वे जाग नहीं पाते ।

इंजीनिअर संकट को टालना चाहता था, लेकिन अंत में वही होता है जो नहीं होना चाहिए था । ठेकेदारों ने सीमेंट के बदले रेत मिलाकर बाँधे हुए पुल में दरारें पडती हैं और दो फूट पानी उपर चढ़ जाता है । पहाड़ पोले हैं, मिट्टी कच्ची है, सड़क ठीक ढंग से नहीं बनती । इसलिए काली नदी की लहरें लोगों को निगलने आ.. रही हैं । इस बाढ को रोकने की शक्ति लोगों में नहीं, क्योंकि उनके सामने तो काम मिलने की समस्या, राशन, मजदूरी, अकाल महामारी जैसे महाभयंकररोगों की समस्याएँ जहरीले काले सांप की तरह खड़ी हैं । यह जहरीला साँप लोगों का पीछा करता है तो लोग बचाव करने के लिए कोशिश करते हैं । इन लोगों के सामने रास्ता बन गया है और सड़क खुली है । लेकिन सिर्फ इंजीनियर असलीयत को जानते हैं कि " पुल बह गया है और रास्ता रुक गया है, हमेशा हमेशा के लिए "[36]

इसप्रकार इस कहानी में सारी स्थितियों को जाननेवाला एक ही सचेतन मनुष्य है इंजीनिअर, जो रास्ता बनाने की कोशिश करता है । लेकिन प्रति क्षण बाढ का पानी बढ़ने से खतरा भी बढ़ रहा है । वे जानते हैं कि चार फूट पानी बढ़ा तो पुल बह जायेगा और बचा - खुचा रास्ता भी नष्ट हो जायेगा । एक ओर बाढ़ का पानी बढ़ने के कारण इंजीनियर चिंता में है तो दूसरी ओर उसका तबादला हो गया है, उसको रुकवाने का प्रयत्न इंजीनियर करता है । परन्तु यह इलाका काली नदी, काली घाटी, काले पानी, काले कारनामों और काले साँपों के लिए भी बदनाम है ।

इसतरह जोशीजी विकास का रास्ता रुकने का संकेत देते हैं । इस कहानी को उन्होंने प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया है ।

13) मनुष्य चिन्ह :-

जोशीजी की प्रसिध्द कहानी " मनुष्य चिन्ह " में आँचलिक व्यवस्था का वास्तविक चित्र प्रस्तुत हुआ है । इस कहानी में यह दिखाया गया है कि अबला नारी का शोषण कैसे होता है ।

" मनुष्य चिन्ह " कहानी की नायिका बाल विधवा गोविंदी है जो अपने बूढे बाप के सहारे जी रही है । वह निर्धन, बेसहारा, अबला, दलित, अशिक्षित, शोषित अन्याय के खिलाफ आक्रोश या विद्रोह न करनेवाली निरपराध कमजोर अकेली युवती है, जिसपर अंततक अत्याचार होते हैं ।

इस कहानी में दिखाया गया है कि अत्याचार करनेवाले निर्दोष हैं और अत्याचार सहनेवाली एक मुजरीम है ।

गाँव में पटवारी - पुलिस को देखकर ही लोग भयभीत होते हैं, वह हाथ में लाठी लेकर ही आता है । वह सामूहिक पिटाई करता है तब साबित होता है कि गोविंदी बेकसूर है, उसने कोई अपराध नहीं किया है । फिर भी पटवारी गोविंदी को एकांत में ले जाकर पूछताछ करता है और गांव के एक एक भेद खोलकर सजा देने की धमकी देकर रिश्वत लेकर चला जाता है ।

इसके बाद बूढ़ा पेशकार बड़े आदब के साथ पटवारी - पंचों को अन्याय के बदले सजा देने की बात करके, गोविंदी को बेटी कहकर उससे वही सलूक करता है जो पंचोंने और पटवारी ने किया था ।

इस प्रकार न्याय दिलानेवाले ही न्याय के नाम पर घृणास्पद बर्ताव करके मानवता और न्याय को नष्ट करते हैं ।

14) " हत्यारे " :-

" हत्यारे " कहानी में कानूनी व्यवस्था पर प्रकाश डाला है । इसमें यह प्रस्तुत है कि पुलिस निरपराध को सजा देती है और अपराधी को छोड़ देती है ।

" हत्यारे " कहानी में एक भोला - भाला मछुआरा है, जिसकी सुंदर पत्नी और बूढ़ा

बाप है । मुहल्ले के बदमाश लड़कों की बुरी नजर मछुआरे की पत्नी पर होने के कारण वे उसके बूढ़े बाप को मरवाते हैं और आरोप मछुआरे पर लगवाते हैं । अत्याचार न सहने के कारण मछुआरे की पत्नी आत्महत्या करती है तो वह आरोप भी लोग मछुआरे पर ही लगाते हैं जिसके कारण पुलिस मछुआरे को ले जाकर बिना पुछताछ किये लातों, डंडो से पीटती है और अंत में निरपराध मछुआरा बेहोश पड़ता है तो उसे लाश की तरह फेंक देते हैं ।

इस प्रकार पुलिस बिना पुछताछ के निरपराध को सजा देती है और अपराधी को खुले - आम अत्याचार करने के लिए छोंड़ देती है ।

15) **" बुझे दीप "** :-

" बुझे दीप " कहानी में सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए जोशीजी ने यह चित्रित किया है कि सरकारी अस्पतालों में पहाड़ी गाँवों के अज्ञानी मरीजों को स्थान दिलाने को कितना समय लगाते हैं ।

" बुझे दीप " कहानी में एक गरीब क्षय रोगी भवाली सेनीटोरीयम में स्थान पाने के लिए प्रयत्न करता है । लेकिन उसकी आशा पूरी नहीं होती । इतना ही नहीं इस अस्पताल में स्थान मिलने का खत गाँव तब आता है, जब उसे मरे पूरा एक साल बीत चुका होता है ।

इस कहानी में पहाड़ों की विपन्नता, अभावग्रस्तता तथा शहरों की अमानवीयता का चित्र प्राप्त होता है ।

16) **" अन्ततः "** :-

" अन्ततः " कहानी में व्यवस्था की असलीयत प्रकट करने की कोशिश की गई है । इस काहनी का नायक बिरजू देखने में बावला है, परन्तु समाज के बड़े लोगों की प्रवृत्तियाँ अच्छी तरह से जानता है । ये लोग नाटक में काम करते हैं राम का और प्रत्यक्ष में रावण का।

बिरजू सर्व हारा की पीड़ा व्यक्त करनेवाला एक प्रतिनिधि पात्र है । वह रामलीला, कृष्णलीला व्दारा अपने विचार प्रकट कर लोगों को असलीयत के दर्शन कराता है । परन्तु लोग उसका हँसी मजाक उड़ाते हैं, उसे पागल ठहराते हैं । इस ओर ध्यान न देकर बिरजू रावण की लंका जलाने से पहले राम का ढ़ोग रचानेवाले आदमियों को जलाना चाहता है । राम जैसे मर्यादा - पुरुष के गुणों का ह्रस, अच्छे विचारों की आहुति, स्नेहभाव का अभाव आदि को देखकर बिरजू आहत, घायल और दु:खी होता है । परन्तु वह हारता नहीं, लोककार्य करने के लिए दूसरे गाँव चला जाता है ।

वहाँ भी बिरजू विनोबा जी के भूदान के कार्य को अपने हाथ लेता हैं और अपने अस्तित्व, अपना घर, अपनेलोग इन सभी का त्याग कर इस कार्य में जुट जाता है । अपनी माँ से ही भू - दान करने को कहता है । गाँव के नेता लोग इससे प्रभावित नहीं होते, बल्कि उसकी पिटाई करते हैं । माँ इसी बुरी हालत में बिरजू को घर ले आती है । बिरजू का मन इन बुरे सामाजिक व्यवहार से काबू में नहीं रहता । वह अन्त तक इस कार्य की आवश्यकता बताते हुए अपने प्राण अर्पित करता है ।

जोशीजी ने बिरजू की माँ को भारत - माता के रुप में और बिरजू को उसके सुपत्रों के रूप में प्रस्तुत किया है । वे बिरजू के रूप में आम - आदमी का आक्रोश व्यक्त करते हैं । और समता का समर्थन ।

निष्कर्ष :-

1) स्वतंत्रता के बाद के राजनीतिक नेताओं और व्यवस्था का चित्रण ।

2) लोकप्रतिनिधि के रूप में सत्ता को अपने हाथ में लेनेवाले स्वार्थी भ्रष्ट राजनीतिक भेड़ियों का चित्रण ।

3) सभी कहानियों में आम - आदमी पर जुल्म दिखाई देता है ।

4) चुनाव में बुरे मार्ग से सत्ता हासिल करने और चुनाव के बाद स्वार्थलोलुपता से भ्रष्टाचार करनेवाले नेताओं का चित्रण ।

5) जनसेवा, बुध्दिजीवी, स्वतंत्रता - सेनानी व्दारा आम - आदमी के ओर से अन्याय के विरोध में आन्दोलन ।

6) आँचलिक और महानगरीय राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण ।

7) राजनीति का व्यंग्यात्मक चित्रण ।

****

सं द र्भ

1)	हिमांशु जोशी	हिमांशु जोशी की विशिष्ट कहानियाँ	शुरु की बात
2)	- " -	- " - - " -	पीछले पृष्ठपर
3)	डॉ. विवेकी राय	हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ	पृ. 45
4)	हिमांशु जोशी	इक्यावन कहानियाँ	88
5)	हिमांशु जोशी	- " -	242
6)	हिमांशु जोशी	- " -	243
7)	हिमांशु जोशी	- " -	268
8)	हिमांशु गोशी	- " -	49
9)	हिमांशु जोशी	- " -	70
10)	हिमांशु जोशी	- " -	75
11)	हिमांशु जोशी	- " -	277
12)	हिमांशु जोशी	- " -	258
13)	हिमांशु जोशी	- " -	259
14)	हिमांशु जोशी	- " -	286
15)	हिमांशु जोशी	- " -	245
16)	हिमांशु जोशी	- " -	249
17)	हिमांशु जोशी	- " -	247
18)	हिमांशु जोशी	- " -	315
19)	हिमांशु जोशी	- " -	158
20)	हिमांशु जोशी	- " -	57
21)	हिमांशु जोशी	- " -	58

22)	हिमांशु जोशी	इक्यावन कहानियाँ	पृ 38।
23)	हिमांशु जोशी	- " -	160
24)	हिमांशु जोशी	- " -	29।
25)	हिमांशु जोशी	- " -	297
26)	हिमांशु जोशी	- " -	39।
27)	हिमांशु जोशी	- " -	69
28)	हिमांशु जोशी	- " -	166
29)	हिमांशु जोशी	- " -	2।
30)	हिमांशु जोशी	- " -	94
31)	डॉ. पुष्पपाल सिंह	समकालीन युग बोध का संदर्भ	229
32)	हिमांशु जोशी	इक्यावन कहानियाँ	20।
33)	हिमांशु जोशी	- " -	400, 40।
34)	हिमांशु जोशी	- " -	402
35)	हिमांशु जोशी	- " -	22।, 222
36)	हिमांशु जोशी	- " -	200

****